231/1922 Nashik Shankar ④ 2001 and 406

॥ॐ गणेशाय नमः॥ अथ रूपावतारलिष्मनेवास्तिक॥ विश्वकर्मा चतुर्हस्त त्रिनेत्रचंद्रशेषर अक्षसूत्र १ पुस्तक कमंडलु १ कंवा १ कमलासनमुर्त्ति चतुर्मुख चतुर्भुज अक्षसूत्र शुत्रि चतुर्मुख चतुर्हस्त अक्षसूत्र १ पुस्तक २ शुक्लि ३ कमलधर घोरसुर युगाघ्रि विधि शेसवेवी श्रीपितामहमुर्त्ति चतुर्हस्त चतुर्मुख कमंडलु १ अक्षसूत्र १ शुक्लि ३ पुस्तकधर नेत्रायुगने विषभव विश्वात्मा मुर्त्ति चतुर्मुख चतुर्हस्त अक्षसूत्र शुक्लि २ पुस्तक ३ कमंडलुधर प्रजापति मुर्त्ति चतुर्मुख चतुर्हस्त अक्षसूत्र शुक्लि २ पुस्तक ३ कमंडलुधर गुरुदेवमुर्त्ति: किरीज अक्षसूत्र अंकुश २ नामदेवमुर्त्ति: २ घनवर्ण मर्कट मुखकिरीज अक्षसूत्र २ षटखांग २ दृत्यशास्त्रमुर्त्ति मृगमुख जटाधर त्रिनेत्र २ अक्षसूत्र १ त्रिशुल २ अथब्रह्मायतने घारदेवनागणे अग्निमातृयानदक्षणेसहस्त्रछत्ररुनेज ल शाऽयश्चिम पार्वतीरुद्र वम्मग्रहा चैव उत्तरे लक्ष्मीर्ईशानं मूर्त्तेधरणीधर ब्रह्माना अष्टप्रतिहारमुर्त्ति: सुरषाक रमुगट सक्रच ग्रहीकरवा पद्मसहो श्वदंड १ अस्त्र २ कमंडलु ३ कला जयनाम अक्षसूत्र १ गदा १ षड ३ दंड ध विजयनाम: षटक १ दंड २ अक्ष ३ गदाध जज्ञसेक अक्ष १ पात्र १ अंकुशदंड ध सवननाम दंड १ अंकुश २

133/1922

पद्मकमल अक्षपद्मनेत्रयुक्तं २ अ
मलधवत्व अथद्वादशसूर्यमूर्त्तिकमल
धमाला २ मंडलं २ द्विभुजेपद्मद्वयोना वरुपासू
र्य कमलं २ अक्षमाला २ सामनाधसूर्यत्रिशूल
सुदर्शन २ पद्मलोहदंड २ नागसूर्यत्रिशूल २ पद्म
लोहन पद्मापद्मपुरुष नामसूर्यमूर्त्तिगदा २ सुद
र्शन २ स चित्रसूर्यमूर्त्तिसप्तनप २ होमकुंडक
२ स्त्र शमूर्त्ति द्विभुजेपद्मरुद्रार्यसूर्य सुदर्श
नपद्म २ विधासूर्य अथद्वादशसूर्यनाम धातोऽमि
त्र २ अर्यमाश्रुरुः धवरुण ५ सूर्यः ६ त्वाग ७ वि
वस्वान् ८ पूषा ९ सविता १० भग ११ विष्णु १२
चक्रमामूर्त्तिः ॥ अथवाहन ॥ मृगयुत द्विभुजेग
दा वरदमंगलमूर्त्तिः मेषवाहन चतुर्भुज गर्दशं
ख १ त्रिशूल २ अथवरद अक्ष ॥ अथवृषभमूर्त्तिनि
लवर्णचतुर्भुज सिंहवाहन वरद १ षट्कगश्वेट
कशगदाध ॥ अथबृहस्पतिमूर्त्ति ॥ पितवर्णचि
तुर्भुज वरद अक्षसूचकमंडलुदंडध शुक्र
मूर्त्ति श्वेतवर्णचतुर्भुज वरद १ अक्षसूत्रः २ क
मंडलुदंडधशनिमूर्त्तिनीलवर्णगंधर्ववा
हनचतुर्भुजा वरद बाण २ धनुष ३ त्रिशूल
राहुमूर्त्तिः सिंहवाहन करालवदनचतुर्भु
ज वरद १ षट्कगश्वेटक ३ त्रिशूलध केतुधू
वाहन धूम्रवर्णगंधर्ववाहनवरद १ गदाध
र अर्घ्यग्रहाकिरीटिनकार्या नवनात
प्रमाण २ त्न कुंडल केयुर हारान्तरणकर
र्या नवग्रहमूर्त्ति मेषवाहनचतुर्भुजमरु
ये २ वरद ३ शूलि २ मृणाल ३ कमंडलु
ध यममूर्त्ति महिषवाहन कृष्णवर्णत्रि
सूक-कर्कट ध निरुतिमूर्त्ति श्यामवर

हस्त दंष्ट्राकराल षट्कगश्वेटक शूलि
मसक करालमुख वरुणमूर्त्तिः म
करवाहन वरदपाशयुक्त कमंडल
पश्चिमदिशि वायुमूर्त्तिमृगवाहनव
रद ध्वजापताका कमंडलुध वयव्यादि
शि धनदमूर्त्तिः गजवाहनगदा निधिंद
ईशानमूर्त्ति वृषभवाहन वरद त्रिशू
ल नागेंद्रबाजोरुद्रशा कमंडलु उत्तर
दिशिस्वामि अथनारायणादिदशार्थ
शमूर्त्तिःसेदा नारायण १ ॥ केशव २ नारा
यण ३ माधव ४ गोविंद ५ विष्णु ६ मधुसूदन ७ त्रिविं
क्रम ८ वामन ९ शमूर्त्ति १० श्रीधरमूर्त्ति ११ हृषिकेशमूर्त्ति
मीवानेंपूज्य १२ पद्मनाभ १३ दामोदरमूर्त्ति १४ संकर्षण
नें किरातनें मेदनेंपूज्यः १५ वासुदेवमूर्त्ति १६ प्रद्युम्न
शिंकुंसारनें चाणूरानि १७ वेत्रपानेंलो
हारनइ १८ वात्सारनि १९ पूज्य २० दामोदरमूर्त्ति
बाराहचारिनेंएकदेहीनेंपूज्यहरिहर
हिरण्यगर्भनारसिंहत्रामनवराह अ
नपरंसर्वचर्णनेंहाडेमूर्त्ति नृअंगंपूज्यग
संगुहीइ नेणेंवामेबाजीमूर्त्ति वेसाभी
इनखआसरणमात्रा अयूधस्तागांकु
इनेमूर्त्ति नवाहाइनही अथचतुर्विंश
तिमूर्त्ति आयुधसेद इतिस्वां : ॥
पालणपूरेः लक्षुवेः श्रीरस्तुः

Digitized with financial assistance from the
Government of Maharashtra
on 11 June, 2017

ग: च० केशव १ ग:	ग: अनिरुधए ग: व: प:	प: नृसिंह २७ ग: व: ग
ग: मधुसूदन २ प: व: ग:	प: ग: पुरुषोत्तम २० व: ग:	प: चं: अच्यूत १८ ग: ग:
ग प: संकर्षण ३ च: म:	ग: ग: अधोक्षज २१ प: व:	च: ग: वामनए ग: प:
ग: ग: नारायण ४ प: व:	व: ग: जनार्दन २२ ग प: ग:	च: ग: नारायण २० ग: प:
ग: प: दामोदर ५ व: ग	प: ग: गोविंद २३ च: ग:	प: च: पामास्य २१ ग: ग:
पी: ग: पद्मनाभ ६ व: प:	च: ग: त्रिविक्रम २४ प: ग:	प: व: नृपेंद्र २२ ग: प:
ग गः विष्णु ७ ग: चं:	व: ग: श्रीधर २५ प: ग:	ग: च: हरिश्च ग: प:
च: ग: माधव ८ ग: प:	चं: ग: हृषीकेश २६ ग: ग:	ग: प: कृष्ण: २४ चं: ग:

दोवआगुरुडमुर्त्ति मर्कतमणीसुनासम
वर्ण: कौस्तिक समनासिकचतुर्भुज ध
वृशनेत्रचक्रमुषगृध्रसमरूजातेश्वर
णयांष२ करवी हाथ२ अंजली जोडी क
रवी न: २नवनालमांन करवुंहाथ२ छत्र:
सर्णकुंलकरवा किंचितलंबोदरकरवुं
सर्वाभरणसुषितकरवुं श्रीतगाद्यानवें
हजेंकरवा त्रिविक्रममुर्त्ति: अष्टबाहुने

131/1922

दक्षागदा बाणपद्मजिमणेहाथेकरवां
दशनालप्रमाणकरवां ध वामनमुर्त्ति
डिमुजेविप्रमुर्त्ति: कविकारकरवामृग
चर्मजग्रोपवीत कंठलीस्त्रियांयुक्ति वत्र
कमंडलहाथेकरवा समनालप्रमांणक
रवा राक्षमुर्त्ति डिमुजकरणा बाणधनु
षकरवुं वाराहमुर्त्ति वाराहमुष गदा प
द्मधर दाढाग्रहष्टीकरवी त्रवाकोपरि
नीलधरता हष्टीकरवी जिमणेहाथक
टिसंस्थकरवो एकपगनुर्मनिचांप्रिक
रवु एकपगनागिडनेमाथेंकरवो त्रीषच
मूजहाथ२ ज्योग्याकरवाहाथ२ उगीरा
मुग्नलोकरवाउर्द्धहाथेंशंखधवा महाका
यनीहणभंनेत्रनृसिंह मुर्त्ति: रौद्रसिंह
मुषनेत्रअष्टभूजनखागदरएयकत्रयप
डगधेटक धरवकरवु नीचाहाथ२वि
दारनाकरवा हाथ२ शंत्रमालकाटना
करवा अग्रदक्षिणपाणिग्रहहाह धश्र
ष्टद्युम्नबाजु: पाणिजिमणेचक्रपाम्नो
डाबिजारव उर्द्धजिमणेकमलउर्द्धडा
बेगदा जलशाईमुर्त्ति: जलमध्येशयनेज
छंगेडायनकरवा चतुर्भुजेकरवा एक
पगलक्ष्मिनेहृदेकरवो एकपगडोमनि
डेछेगेकरवा एकहाथजानुकरवु एक
संतानमंजरीधरवकरवु नाभिकमलने
विषेब्रह्माकरवा पाम्नेबंकमधुकेट
भकरवा वैकुंठमुर्त्ति गुरुडासनक
रवा अष्टबाहुकरवागदा: षडग: बा
णचक्रजिमणेहाथेकरवा त्रीणजिजि

मणिपूरकारनृसिंहकरवा बीजपानो
श्रीलुमाकरवी राहस्यकरवा विश्वरूपा।
मूर्त्ति: विसमभूजयनाकाङ्गषड्लवक्त्र अं
[illegible] बाणचक्रलांगल वरद दक्षणह
स्तकरवा पनाका: दंडपाशगदाशृंगा प
द्म: पर्वत: क्रमुद अक्षमालाअंकुशाधि
करवु हाथ२ नानार सिंहवाराहमुखेत्र
लोकपोदनविधि: सोलभूज गरुडवा
हन गदाचक्र अंकुशाचांण शृंगे मुद्र
र्शन वरद युधिनकर शास्त्र एदक्षणऊ
युधमागरीयाअधनुषपद्म चकमुदल शृं
गीहाथ२ वरदजटासेतव स्त्रीलेप: व
र्णरक्तवस्त्र रानीनोपुरक्तनेत्रमोटिना
सिकामोटुउर: मोटुबाहुत्रिनेत्र षडग
षटकधरनाकरवा शोवासरणकरवा
अघोरि श्वरमुर्त्ति: कराल दांतविकट
मुख त्रिलरमुस्तक त्रिलोचनारुंदमाला
शायनकुंडल सयनहिषा सर्वजनोर्ध्वी
वनीमाला अलशीनोफुलनुवर्ण पी।
तासमापीलीजटा शशांकमुकुट नक्ष
कत्रिशूलकरमीषड गदंड एदक्षणक
रवा एमुर्त्ति जेहपूजार: निहांवेरानुनो
शाकरे नत्पुरुषमूर्त्ति पीतांबर२ पीनज
नोई विजोरुगावेदाष्ठे अक्षसूत्रजिम
णे ईशानमुर्त्ति: फटिकवर्ण: चहुमुग
द जटाअंकुत्रिशूलदक्षणे वामेकर
वा मृत्युजयमुर्त्ति षटभुजरुंडमाला
व्याघ्रचर्म: सर्वभूषण: त्रिशूल[illegible]
[illegible]क्षणे भुजे कपालपास वा वामभुजे

हाथदोय२ जोगमुद्रा[illegible] ए
कमुख त्रिनेत्रअक्षसूत्र त्रिशूलकमल
दाथ२ करवादिव्यरूप मोटुनिलामवा
शांकशोभर किरणऊ मुर्त्ति चक्र[illegible]
त्रिशूलकीऊ त्रिनेत्रहस्तौध पुस्त
कं वरदअंक अघोरेयीतवकवर्ण
षडगत्रिशूलमहाक्रोधधर सयऊन:
महालय श्रीकंठमुर्त्ति: विचित्रवस्त्र
धर यज्ञोपवीत चत्रबाहु: एकमुख
षडग: चापशर षेटक: वज्रमुगट: स
र्वाभरणभूषऊ: महादेवमुर्त्ति चत्र
बाहु: त्रिनेत्र: दक्षणहाथ२। अमृत
पीताकरवा वामअंक सुत्रमाला देव
ताअभयवितकरवा एकादशमाहारु
द्र: सदाशीवमुर्त्ति पंचवक्त्र त्रिनेत्र
पद्मासन दशभूजा हाथ२ योगासन
करवा असयंत्रिशूलषट् वां
ग भुजगम अंकुशपुत्र। उमारूपे विजो
रुपे उमामहितकर वाविजोरुत्रि
शूलदक्षणे भूजेकरवा उमानुहस्त
नेकाधिकरवु विजेहाथदर्पणकरवु
नीचुहस्तकरवु गणेशकरवा संगी
तारंभनृत्यरूपेकरवु हरिहरांकर
मुर्त्ति हरिहरकरएकअंगकरवा द
क्षणेशिरुद्रवामांगे हरिहर दक्षणेज
टासार वामेमुकुटदक्षेकुंडल वामे
कर शंखदक्षणे अक्षमालात्रिशूल
वामेशोभकरवा हरिहरकार्त्ति केयमु
र्त्ति हरिहरअर्द्धकार्त्ति केय एकांगकर

वा पद्मशंष धनत्रिशिखुंड वा हनक
रवा: शिवनारायणवा मार्हनारायण
दक्षणार्द्धशिवकरवा सर्वपापविना
शनहोमश्रुक्षनामणि बहिरधामा
नितकरवा शेषचक्रकरवाचक्रा
स्त्रानकें गदा अथहाथअर्घः स्तन
करवा अथवो शंदक्षणेकरवा: शे
षकटि अर्घअक्षण पीनवस्त्रचर
ण मणिमुषितकरवा दक्षणेर्घजटा
भारकरवा अर्घचक्रनिलाडि मूल
गहार बिहिरधानुजगकरवा करेद
क्षणवरद बीजेहाथत्रिशुलकरवा द
रिहरियोनामहमुर्त्ति: एकेआसनेब
दिरधाकरवा हाथचवतमुखि अ
क्षसुत्रत्रिशुलगदा दक्षणेसूजेकर
वा कमंडलषट् वांगचक्र एवांमजु
जेकरवादरि हरयिनामहचर्ममुख:
अष्टमुख पद्मरहस्तदिवाकर षट्
वांगत्रिशुल चक्रएकेकविनाशो रु
द्रदक्षणेकरवा कमंडल: अक्षसु
त्र: यिनामहशेषचक्रहाथेंकरवा ए
विधिध्यारकरवि वेडनैरवमुर्त्ति चत
र्मुखहाथ६करवा कमंडलअक्ष
सुत्र: हाथ२कमल कमल अर्द्धहा
थ२ षडग: शंगि: शर: अर्केशवर
द एदक्षणेकरवा षटवांग षेटक
चाप अथअजयकपाल वामह
स्त: बहिनागजचर्मबिहि निरुंडमा
लाएदवा वेडनैरवकरवा: अथ

चिन्नयाद्यमुर्त्ति: षोडशभुज षडग: त्रि
शुलडमरु ७अर्केशसर्यचक्र गदा अ
क्षसुत्रदक्षणेकरवां षेटकषट वांग
शंगिकरनि तरजनीघंटाकपालवामें
नर्द्धादिकरवो त्रंबकमुर्त्ति षोडशभु
ज: अथचक्रडमरु मोगर शरत्रिशुल
अंकुश: सर्पःजाप दक्षणे नर्द्धादिक
राष्टकेगदा षटवांगपात्रकोमुकतर्ज
नाघंट फरसायटिशे वामकर बांहरि
हरमुर्त्ति: हरिहरएकवाकरवां दक्षि
णार्द्ध सदाशिवकरवा: वामार्द्ध यक्षि
शाकरवा श्वेतनील आकृतिकरवो: व
रदत्रिशुल: चक्र: मज एकमुक्तिमा
करवो दक्षणेपाशेहषसकरवु वांम
पाशेंगरुडकरवो एहधशंकरनिसे
दकरीनें वक्त्रोक्तमुर्त्तिनेदधाऽतेवाशि
वंदीयाएविकस्त्रंबे अथलेगाधिका
र: आवलिंगधाउंमयकरवा सोनानु
२ रुपानु२ त्रांबानु२ कांसानुध पीतल
नुप तरुआनुद शीशानुछ लोहानुद
एआवलिंग: एकआंगुलादिदेइने
आव आंगुलधाउमयलिंगकरवु ने
हना आंगुलप्रतिमाजे वामनहोइ
श्रीमुष रुद्र तेजर महाअवच३ आ
नेदध शुक्रारक्ष थ श्रीपूज्य द नेदि
वर्द्धन प एआवलिंगविंशीअंशकरवु
आपायधीमात्रयोत्रिशूलकरवु अथ
काष्टलिंगनि शीलत्रंगुलनी मात्र
एथकि हाथद लगणेकरवां मथोत्रि

141/A22

गिन्नानिग्रोध ॥ अंगुलआदेदेहनिं १२८
एकलोआवावीस लाएकअंगुलनीह
हिकरवीननलिगनामामकरेद १मालि
प २कुष्प ३ सिद्धार्थध कंदडाख्य ५ पौ
रव ६ काम्प ७ कुष्मकट फलोझव ए ए
लिगग्रावनेत्रिग्राविः अशोक ग्रह्
ग्रः षडरग्रापासुडिआमली: लोबरतं
जणीरवदारु वायुमक्कडोकगर अ
गर मलीयागिरं एनली हस्तनोलिग
करवोक्तणः निग्रंथीनकोटरकरवी
पाषाणनोलिगरोथिकंजखुनकर
वृं एकहाथआदे देहिनेनवहाथनें
वोयेनागवक्षारवु नेत्रीमलगेकरवी
नवहाथलिगश्रीनयनद्वं नवः स
यरत्यः पापहतिजमहातेज परिपर
त्रोषरः त्रिधग्रोत मनिंद्रादल कररु
द्रगनेड ग्रदाधत्मकवामदेवअघोरे
श्वर तत्पुरुषा ईशानमृत्युंजविजय
किरणाख्यरा स्त्रश्रीकंठवसुवर्धन
एकरीक सुवक्त्रारवर्जमाहेश्वर वि
श्वेश्वरत्रिनेत्रः अंक महाकालएनां
म च्यारहाथनोघ्रासादिएकहाथनु
लिगकरवुं जेष्टलिगवेक्कअंग्रह
नीसेनतवहाथकुंत्र पांचआदेदई
नें ध्रुव ६ नक्षारलगणः ग्रासादिहा
थनीसंख्या नथिकमध्यमपंचमाग्रि
हाश आदिदेईनिंनवहाथलगणदु
आदेदेईनें ध्रुव लएत्रिवाहत्थयहा
थसंख्याजेणावी त्रोत्तिअंत्रोहाथअर

हिदेईनवहाथलगणत्रेतमः मध्यमम
ध्यमांनजोएवुं गर्भपंचाग्रानीजाइजत
मः नवाग्रा पंच ध नागमध्य गर्भाधिक
न्यमजाणवुं ग्रदयेमाटी लोहादीर्घध
नागचोवीसनाग ६ षण्णवाद्दाएकनवांग्रा
लगणविस्तारेकरवा विस्तारनेनवद्वा
दआवेंपिनामद्दजवानाग ८ नारायण
नागेंपमहश्वरनागध थुनीचूवद्दनामधो
अष्टस्त्रवैद्यधवृतनाग ए पावद्दोनिग्र
हें सेकर गर्भाधिक ३५ त्रिवायतनमा
नमध्येनागआवलवलिंगेंद्रजेष्टम
ध्यमकनिष्ठत्रिण त्रिणसागद नेदना
मंदिरनगरमानकहांगर्भ ३ द्वद्व नागें
दशांग्रेंद्राविडनागकहांद मध्यमअं
शतिरा १३ ग्रनमः श्रीरुद्रः कल्याणमः

रुपनाथ १	दृषचक्रनामायक्ष १
पूर्वषाढानक्षत्रग०	पाशअंकुबीजोरु २
धनरात्रिएप्लक्षादानु	वरदध स्वेतवर्णध
वाहनसुवर्णनुवर्ण	दृषाढ्य द ६
चक्रेश्वरी १	अजितनाथे २
वज्रवरदखबीजोरु २	रोहिणिनक्षत्रध दृष
ग्रमयध पद्मग्रनधरा	रूढी २ दसीचारन
रुढवाहनद स्वेतवर्ण७	३ सुवर्णवर्णध
मालाद नामाजक्ष २	रोहिणीदेवी २
पाश १ अंकुशदग्रन	शोभचक्र २ ग्रभय
ग्र ३ वरदध ग्रोधपव	३ वरदध त्रयग्रात्रा
क्र द गदा७ पाशाढ	नपत्रथेवाहन द
ग्रोसवनाथ २	त्रिमुखनामायक्ष ध

143/1922

मृगशिरनक्षत्रध्वजं फरशी१ अक्ष२ गदा	
पुनर्वसुनक्षत्र३ अश्वा	३ चक्र धनुष्य वज्रं
हन सुवर्णवर्ण:॥	श्यामवर्ण त्रिमुखवाह
	नरौद्र गदा
पद्मप्रभ ६	अभिनंदन ४
अनंत१ वरद२ फल	पुनर्वसुनक्षत्र ५
३ अर्द्धचंद्र ४ फरसी५	मिथुन राशि३ वानर
कमलासन ६	वाहन सुवर्णवर्ण॥
चंद्रप्रभनाम पद्म ८	चंद्रप्रभा ८
नाग१ पाश२ वरद३	नाग१ पाश२ अंकुश३ वर
अंकुश४ हंसवाहन ७	द४ मिंहवाहन ७
सुमतिनाथ ५	कुबेरनामायक्ष ५
मघानक्षत्र१० सिंह	सर्प१ फल२ सर्प३ व
राशि४ क्रोधवाहन	रद४ गरुड वाहन
सुवर्ण वर्ण:	
पुरुषदत्त ४	पद्मप्रभनाथ ६
वज्र१ चक्र२ फल३	चित्रानक्षत्र१४ कन्या
वरद४ गजवाहन	राशि६ कमललंछन
५	रक्तवर्ण
कुसुमदंतनामाजक्ष ६	चंद्रप्रभ ६
गदा१ अक्षमाला२	चंद्र१ शंख फल२
गवाहन	वरद४ अश्ववाहन
सुपार्श्वनाथ ७	मातंगनामाजक्ष ७
विशाखानक्षत्र१६ तुला२	गदा१ पाश२ मेष
शि ७ सुवर्णवर्ण स्वस्तिकलंछन	वाहन
कालिका ७	चंद्रप्रभनाथ ८
घंटा१ त्रिशूल२ फल३	अनुराधानक्षत्र१८
वरद४ पक्षीवाहन ८	वृश्चिकराशि रक्तव
	र्ण चंद्रलंछन

अजितनाम अजित ८	जया नामा शांतिनी ८
फरसी१ पाश२ अभय३	त्रिशूल१ पाश२
वरद४ कपोतवाहन	अंकुश३ धनुष४
	बाण चक्र५ वर द६
सुविधीनाथ ९	अजितायक्ष ९
मूलनक्षत्र१९ धनु	शक्ति१ अक्ष२ फल
राशि९ श्वेतवर्ण	३ वरद४ कूर्मवाहन
मगरवाहन	
महाकाली ९	शीतलनाथ १०
वज्र१ मुद्गर२ फ	पूर्वाषाढानक्षत्र२०
ल३ अभय४ कूर्म	धनराशि९ सुवर्णवि
वाहन ५	र्ण श्रीवत्सलांछन
ब्रह्मनामायक्ष १०	मानवी १०
पाश१ अंकुश२ अ	पाश१ अंकुश२ फल
भय३ वरद४ चक्र	३ वरद४ शुकरवाहन
५ वाहनवाहन	
श्रेयांसनाथ ११	ईश्वरनामायक्ष ११
श्रवणनक्षत्र२३ मक	त्रिशूल१ अंकुश
रराशि१० सुवर्णवर्ण	२ पाश३ वरद४ च
गेंडावाहन	क्रवाहन
गौरी ११	वासुपूज्यस्वामी १२
पाश१ अंकुश२ अ	शतभिषानक्षत्र२५
भय३ वरद४ मृग	कुंभराशि११ रक्तव
रुढ	र्ण महिषवाहन
कुमारनामायक्ष १२	गांधारी १२
धनुष१ बाण२ फल	पद्म१ पद्म२ फल३
३ वरद४ चक्र ५ मो	वरद४ मकरारुढ
र वाहन ६	
विमलनाथ १३	षण्मुखयक्ष १३

उत्तरभद्रपदनक्षत्र २७ मीनराशी १२ सुवर्णवाहनवाराह	धनुषबाण २फल ३वरदधवज्रयुक्त मत्स्यवाहन ६
वैरुट्य १३	अनंतनाथ १४
सर्वौषध २वटक ३ धनुषधबाणध गोवाहन ६	रेवतिनक्षत्र २७मी नराशि १२ सुवर्ण वान सीवालीवाहन
पातालनामायक्ष १४	अनंतनाथ १४
पाद्म १अंकुश २धनुष ३बाणधवरद ४त्रिमुष ६कमलवाहन	धनुषबाण २वरद ३उन्नयधहंसारु ६५
धर्मनाथ १५	किन्नरनामाजक्ष १५
पुष्पनक्षत्र ६कर्क २७मी धधनुष सुवर्णवानव ३लछन	वज्र १अंकुश २धनु षधबाणध्वज वर ४बाणध्वजलधवर दहमत्स्यवाहन ७
मानसीदेवी १५	शांतिनाथ १६
त्रिशुल १पाश २चक्र ३उग्ररुधफलधव्या घ्रवाहन ६	गरुडीनक्षत्र २मेष राशी १सुवर्णवाने मृगवाहनः ३
गरुडनामायक्ष १६	महामानसी १६
पद्म १अंकुश २फल ३ वरदध शुकरवाहनः	शार १सारंग २वज्र ३ चक्रध गरुडवाहन
कुंथुनाथ १७	गंधर्वनामायक्ष १७
कृत्तिकानक्षत्र वृष रा १सुवर्णवाहन ३गलछन	पद्म १अभय २फल ३वरदध शुकवाहनः
जाया देवी १७	अरनाथ १८
अंकुश १फलनव कुंचपाश ३वरदह शुकरवाहन ७	रेवतीनक्षत्र २७मी नराशी १२ सुवर्णनिवा नेमदावत्सलंछनः
अकूट नामयक्ष १८	विजया देवि १८

वज्र १चक्र २धनुष ३ बाणफलधवरदह कमलवाहनः	वज्र १चक्र २फल ३सर्प सिंहारुढः
मल्लि १नाथ १९	कुबेरनामायक्ष १९
अश्वनीनक्षत्र १मेष राशी १नीलवर्णकल शलांछनः	पाश १अंकुश २फ ल ३वरदधचतुर्मुख ४मीनवाहन ६
अपराजिता देवी १९	मुनीसुव्रत २०
धनुष १खेटक २फल ३वरदध आत्मपाद	श्रवणनक्षत्र २२मक रराशि १२ कृष्णवर्ण कूर्मलछन
वरुणनामाजक्ष २०	बहुरुपा २०
पाश १अंकुश २धनुष ३बाणध संपधवज्रह वक्र ७उन्नयध	शंख १खेटक २सर्प रुढ ५
नेमीनाथ २१	कूष्मांडीनामयक्ष २१
अश्वनीनक्षत्र १मेष राशी १सुवर्णवाननी लास्यलछन	त्रिशुल १शक्ति २व ज्र ३नीलोत्पलधवा हन ५
चामुंडा २१	नेमनाथ २२
त्रिशुल १खट्वर ३. पद्मध वज्रपचक्रह डमरु ४कुंमालधकमल	चित्रानक्षत्र १धकन्या रा १शंख १२कृष्णवर्ण षलंछनः
गांधर्वनामायक्ष २२	अंबिका २२
धनुषबाण लिंग वमुद्गरधफलधव रदह त्रीमुखसूर्पवा	फल १वरद २आम्रगुछ शोभायमानवाहन सिं ह
पार्श्वनाथ २३	धरेंद्रनामायक्ष २३
विशाखानक्षत्र १६तुल रा १नीलवर्ण फणी लंछनः	पाश १अंकुश २पद्म ३वरद धपद्मासन पद्मकुर्कटवाहन

मालाबार २ध मातंगनामाजक्ष २ध
उनराकाल्गुनानक्षत्र फल १वरद २ग
१ध कन्यारा शि ६ सुवर्ण जवाहरनी
वात्सिंहलोचन
पद्मावती २ध सिद्धायिका २ध
पाशा १अंकुश २ पद्म ३ पुस्तक १अभय
वरद ४ चक्र कंठवाहन २ सज्जासनारुढः

श्री विश्वकर्मजिनवाचः ॥ अथ रूपंरूपमाकारं विश्वरूपंजगत्स्वरूपं केवलज्ञानमुत्पिंडं वीतरागं जिनेश्वरं १ त्रिभुवनैकवरेण्यं ब्रह्मेशजिनरूपब्रह्मासनस्थितं लोकमानेश्वरं ब्रह्मेशजिनमूर्त्तिं जगद्गुरुं २ नामानिगुणमारभ्यानंतं ब्रह्मशुक्लवास्तुवेदिसिः चतुर्विंशतिरुषभलांछनादौ वर्द्धमानांतकमथा ३ ऋषभादिपरिवारिः ऋषभः दावर्णश्रीकरः नन्द्यावर्तसंज्ञाच प्रतिमामानकर्मणि ध्रुवपीठस्थितपद्मवरूपा ऊर्द्धस्थाप्रतिमालक्षणं विविधा यथादृश्या पर्यंकासनमादिशेत् ४ वा मेदपीठेनाभौ उपर्यंघ्रिकरोपिवेदहीणावामेथवीतस्यंकाशनेत्रुनेशुन ६ दक्षश्रोर्द्ध वामकुक्षौ नकलंजघये श्रीवत्सो ऋषभकयुक्तेनछात्रादिपरिवारिते ७ अन्योदन्यज्ञानस्कंधांतर्नियुक्तसूत्रनिर्यत्रिनाल कर्णेनचलयोर्मध्य सूत्रकोचरंश्रका ८ नवांगालेनरूपेना लम्बोदस्यो गुल्फंगुलानांतंतक बाकिंचित रूपमज्ञासदा ९ ऊर्द्धमान मष्टोत्तरज्ञातः सूत्रंतविविश्वकर्मणाः

ऊर्द्धा प्रतिमा मानंमानेनच अष्टरूपं १० पंचतालं समुत्सेधं चतुस्तालंच विस्तरं ना लोकंच विलक्षावो अंगुलानांचतुर्दशं ११ तेनांगुल प्रमाणेनषट्चासप्तशतेन वसारंतस्य माणं हि भूजयेविचक्षणः १२ अष्टोत्तेअंगुलीनांचयमानंयस्यकारणं आननप्रतिमामानंमष्टचाविंशजिने १३ लालेनाः ग्रीवाहनुग्रीवाहनालीगुह्यमेढ जानुजंघासंख्यायादो नवांगास्थानकानिच १४ पंचपंचचतुर्बाहुदिक्षु च वंचदृश्या चतुश्चतुस्थानालोधुनरा छ्रोत्कमेणेन १५ इत्यंतनवांगानिअंकस्थाः नानिपूर्वनयनोर्द्धनस्यमानंकेऊर्द्ध अधास्वरूपकं १६ वर्त्तनाकथायिष्यामि अंगुलानांयथाक्रमः मुखजंहस्तगुल्फंचैव द्विभुजयोविचक्षणं १७ वेदंगुलंललाटंच नासिकापंचमंगुलं हनुकांगुलंचत्वारि ईष्टरुंद्रपादमेकंच १८ अधरेस्मपादंच मार्द्धगुलंवदीसवेत् नयंगुलंतवग्रीवा हृदयंदशमंगुलं १९ चतुर्दशस्तनस्थानालोचतुर्गुह्यंमेढकार्त्रिनं करंचतुरंगुल्याअष्टपादोरुकार्त्रिनां २० जानुकंषडंगुलं नलकेजंघालोपरिनस्तथा २१ स्थितंचमद्यास्कानंविस्तारंअनश्टगुंश नक्रंविस्तारमानेनअंगुलानंदशजंघा ना लालीलागुल्फंचाष्टनेत्रंचचाष्टमंगुलं २२ नासिकायेमंगुलंकारणंनयमंगुलं नेत्रंअंगुलंचत्वारि २३ भ्रिअंगुलमुदयसवेत २४ कर्णागुलंतवोमध्य

पुष्पबाणमदोत्कटः चबूकोगुलेचत्वारि
बटीविचारिमेचच २४ ग्रीवादशांगुलेत्रो
ननेत्रयमंगुले पूर्वे सार्द्धअंगुलद्वयो
ष्टौ सार्द्धगुलावटानवेन २६ कक्षोबाम्ने
प्रकर्त्तव्याछाविंशतिमंगुले बुद्धकटि
विस्तारमानेच अंगुलाणांचषोडश २७
बद्धपद्मासनमाणेच अंगुलाणअष्टादश
छादशांगुलमध्येचस्तनगलेविधियते २८
अष्टांगुलबाहुविस्तारे सप्तांगुलअद
स्तथाकरतले अष्टाङ्गदशांगुलंदीर्घं न
त्रकारयेत् २९ विस्तारेअष्टांगुलनत्र
गालकेचक्षुरं गुलेबाहुग्रंपाचांगुलेत्रे
यं षडांगुलंतत्रमस्तकं ३० घमिक
धिअंगुलांशेयं कटध्वमस्कंधेण नवां
गुलंभवेत्यसो विस्तरेचाष्टमंगुलं ३१
चाष्टांगुलंस्तनादौदीर्घत्रापंचपंचच धि
स्तारमस्तकेकर्णनासाग्रंकर्त्तव्यापिअं
कं ३२ सरिञ्जत्रिशुलच कास्तीडवामु
कंनामुरत मप्पर्घाटी२ अंगुलीवज्र
३ बाणधनुस्त्रिनुमायुध पाशद शिव०
संषदकपालएषपर१० चमुरुनिमुक्ति
शिघासन अंगुल१८ध पद्म अं० १ध स
द्म अं०॥ १२ हस्ती अं० १० यंत्री अं०
२ द्युत अं०२ देवनि अं०८ गजा अं०
१० सीह अं०१२ यक्षणीलो अं० द्युनि
सिंहासनकाम्नागर्त्तनिर्दि अं०॥ ५०
यावत्कार्श्व अं०८ कासगोत्रजाचि अं
०३० अं० सनस्त२ मनाली अं०॥
१० विस्तार अंगुल २२ स्थानमुका अं०

६ यांत्री अं०२६ तिकाद्यांगुल चतुर्दु
विस्तर अं०८४ अं०६ मागरदु अं०
१६ तिलतंकदु अं०५ मालाधर अं०
२०४ तोमंडले बीजापासाएतत्पुनर्दि अं
०५ तोमंडल अं०२२ अं०१० मन्त्रवि
स्तार अंगुलां०॥२० तसागी प्रसनगले
६ष्टिबत्र अं०२० विस्तरे अं०१० नदि
अं०१२ निर्गमः ६ तिबचुटा समानबिंब
नुपरिगरल बणकांगुलत्रेअष्टधि अं
गुलधनत्यानेत्रि अंगुलत्रेहृदिवा
जयेच्छरंगुलं१ पंचमांगुलत्रेन् हृदि
उर्द्धगंडपडंगुलंत्रा समांगुलेनवत् बोधी
हीन अष्टगुलेसदा २ नवांगुलेचछत्राय
ष्ठम हीनदशांगुलं एकादशांगुल बिंब
स्यसर्वकामार्थसिद्धिदं ३ एतत्प्रमाणवि
द्धानं नरूपेसादकंपुन र्द्धकरुमना
ज्ञाय कुलीदायकंनोदरा ध जंघाहीना
नवेनसाद्ध आचार्यकविधानिनि अ
धोहीनानिकुः स्वाय: सत्यासत्यागचक्षि
ना थ चक्रनाज्ञादरिद्राय: करषीणेन
लोयना वणिलबेक्रलंयानि ६ नालेन
खमुषं वैवविज्ञालेसंपदक्षयं चतुर अ
सवेदिनं नासीलंबकुलेक्षयं लंबका
दविपोगंच सोम्प सर्वार्थसाधकं ७ इ
तिजयोवाच:॥ श्री विश्वकर्मउवाचा: वि
श्वकर्मणोक्तं चेत्यालयप्रतिमा स्थापना
निर्णयविधिक्रमेन श्रीपूर्वाचार्यउक्तं नि
त्यंदेवगुरु स्मासे गंतव्यंपूर्णपाणिभि:वि
धेयं सत्रचार्य: सानास्या सोविधिक
ति:१ आजन्मगुरु देवानां मर्वनं ज्युम्प
ने सतिरागादिशुद्धसिर्न स्यान् यदित

नवदेहन २ ऊर्ध्वचूलिनिधास्यस्यात्
त्वानि श्राप्रदक्षणा २ देवस्यार्चा त्रिधा
ऊनवा नेध्यायेत् सिद्धिं शुद्धिः ३ श्रार्षी
गृष्टिसिरग्रीवो विश्वनिग्रायं नाशुरः वि
संसारविकारश्च यादेवसनतंमनः ४ उ
पविष्टस्यदेवस्यार्धस्यवा प्रतिमालवे धि
विधापिचधिवाधा पियुवावस्थापर्यंका
सनिमाविमा ४ वामेदक्षिणजंघो र्वीरु
पर्यंडिकरे पिचदक्षिणे वामजंघोवास्त
पर्यंकासनंमन ६ देवस्यार्धस्यचार्चास्या
त् जानुलंबसूत्रतश्च यं श्रीवत्सादीपयू
क्तोधे छात्रादिपरिवारिकाते: ७ छत्रत्रयं
वनाद्यामानादि सर्वोन्नतसूत्रंनाशालाल
नमोमध्यकपोलेवधऊर्ध्वतनुः ८ रक्षि
तव्येपरिवारेऽपदार्णत्ति शोकरः नसमो
गुह्यसंषष्ट प्रतिमापानकर्माणि ९ सु
त्रेयानुक्तयानिर्यग् दद्यान्नेत्रेचवृका
प्रतिमायाप्रतिसिरा संवदृष्ट दशांगुलं
१० श्रनेषाजानुकंधान्ति यंगऊर्ध्व नि
यातिन केशानश्चयो न स्थानासद्यैः काः
वत्तर स्तनाः ११ नवतालेनवे दूर्ध्वतालश्च
द्वादशांगुलं श्रंगुलान्तिनिकां वायके
त्र रूपस्यतद्विधिः १२ उर्ध्वस्यप्रतिमाया
नं षट्चात्रिंशद्विभागत १३ वक्त्रं पंचत्रवक्ष्मि
सुयर्कि जिनाधिष्यः जिनदृष्यश्च मानिका
नद्वैकवेत्रु रूपकैः १४ नालंनाशाद्वनुग्री
जांवाद्न्याशांशांगुल्लसूत्रको जानुर्घाघ्रि
चेत्येकः दशांकस्थानकानिच १५ नालनो
शाद्वनुग्रीवो तन्तानिगुल्फजानुच श्रष्टो
वाशानबिंबस्यांकानांस्थानानि पूर्ववत्:

१६ श्रतीताद्यागतयतेस्यात् यद्यत्स्वापि
नमुत्तमैः गुरुंगमपियूज्यांस्याद्विना
त्वकिलंनयेत् १७ मष्टोत्तरशतंशतः क्रा
मीतेघ्नतिमामानेधान्यलेपादिजंबिंबवं
गसंस्कारर्क्षधनर्नदिं १८ नखांगुलीवा
ऊनशांडुणांलंगष्टऊर्ध्वमान् शास्त्रस्योदे
शांलगश्चेवधुक्तलानक्षयं १९ पतियेत्
परिवारंधनंन्यथा क्रमंगजवाहनस्त्रा
नाशालवनिनिश्चितं २० श्रानमेकांगु
लंबिंबयवकादशांगुलं गृहे पूजयेद्धि
बंद्वैर्घ्यमादशांगुलं २१ प्रतिमाकल्पिपा
प्रमदंतचित्रयसागृहं ममोघीकापरवा
रंरहितानैवपूजयेत् २२ शेशांत्रिदंत्रिक
त्रिरमधिकांगात्रुविशांत्रिना ऊनांऊन
विनाशायः कुर्त्रिंशायऊसोदरा २३ व
ऊनाशांतिकुः स्वायऊस्वंगांशायकारि
णि श्रनेतानेत्राशांय स्वस्यास्यान् लोग
वाऊनि २४ जायते प्रतिमाहीनाऊ.ध
नक्षयविधायनी चिरपर्युषितावाऊ
नाहत्वंव्यायतस्ततः २५ श्रर्थहिनप्र
तिमानांविना नांचिना हेउर धोमुषो
श्राधिप्रदानरक्षनानोवस्वाविदशा
जे २६ श्रेलाऽथऊर्ध्वनिष्पन्ना परव
स्कदलोत्वा हीनाधीकांगाप्रतिमाः
स्वयंशनतिनाशांनि २८ प्रसारऊर्ध्व
सागस्यसमानाप्रतिमामंत्रतमाया
ऊन मोऊकायै कोनाधिकांगुलः २
९ श्रथवास्वदशांशान हानस्याप्या
धकस्यवको यांप्रासादपादस्यत्रि
ल्यंत्रिप्रतिमासमा ३० सर्वधर्मधि

धातु नारत्नस्फटिकयोरपि प्रवालस्य त्न
बिंबपद्मवैस्यमानंयदक्तन ३१ प्रमाद गर्ते
गेहाधिष्ठितिः नः पंचघ्नकृत्वेय हाद्याप्र
थमलागेदेव्य सर्वाधिनियके ३२ निना
कस्कंधस्कंधमानाप्रतिमास्फ स्कृत्तायके
गमे ब्रह्माऽऽऽर्यलागस्यधिगंस्यायमेव ३३
उक्तस्त्री प्रमनाऽऽयागतिनेग्र लोगाद्यान
यः कुखदास्तिर्यग् दृष्टस्याद्धो मुषाऽऽ
लनाऽऽिनी ३४ धारणाषष्टिभागे रथप
ऽऽधिनायके मुक्तनेष्टविलागंचयोला
गसप्तमंत्तवेत् ३५ तस्यापिसप्तमभागग
ऽऽो ऽऽमनसप्तवेत् प्रमाद प्रतिमा दृष्टिन
योज्या स्तत्रऽऽिल्लिखि ३६ तिमाप्रति
माविचारः॥ ऽऽविवेक विलासमध्ये ना
रदोवाच किविनाः गोष्टीनाऽऽाचिकिमवि
कारवत नेकिमोक्तलोकिमेपादो किम
वदनानारायणे १ विश्वकर्मोवाच प्र
सादमानेनचतुर्दशधिरमानेविभक्तःप्र
माणं कथ्यतेपूर्वविलागंच ऽऽथशृणुः
२ प्रतिमा विस्तारमानेन गृह्यतेचतुरं
शाक तत्रोसेधकृत्वितऽऽगुलाचदशाः
३ तेनोगुलप्रमाणेनषट् पंचाससमु
दयं विस्तारतत्प्रमाणेनकर्तव्यसर्व
कामदं ध मस्तकप्रक्षुयंकार्यऽऽष्टांगु
लप्रमाणेन पादंगुष्ठागुलप्रोक्तो कर
उत्संचतुरंगुलं ४ गुल्फचतुरंगुलवृत्तं
तनगलंचतुर्दशः हृदयंत्रयोदशांचत्रो
केशांतचत्रयोदशः ६ तलातचतुरंसा
गंनाभिकापंचमेवच ऽऽगुलंहृदम
ध्येच ऽऽष्टांगुलमदोष्टकं ७ स्तनोष्ट

यदामध्ये ऽऽगुलीकपत्रवेशयोः ऽऽर्धा
गुलमध्ये गोष्टीचद्वंबटीचधिरंगुलं
८ एवंसचवेस्पट्टपेचास्यांतुच्छयंचविज्ञा
त्त उत्तमषडंगुलस्तत्रकेशानापरिस्थि
तेश्च चिक्रविस्तारमानंच ऽऽगुलानांच
दर्शः ग्रीवादशांगुलंप्रोक्तं स्तनगलं
चतुर्दशांशे कक्षबाह्मेप्रकर्तीनघ्नविं
शांगलंसावयेत् कटिविस्तारमानंचः
ऽऽगुलानांचषोडशः ११ बाहुपक्षप्रमा
णंच ऽऽष्टादशांगुलस्तथा विस्तारतत्प्र
माऽऽष्टांगुलाचमुष्कं १२ समांगु
लेऽऽधस्थानेकरउत्तमा ऽऽष्टदशांदीर्घ
तत्रपंकर्तव्यं तिस्तार ऽऽष्टांगुलानिच १३
गोलकंचतुरोनाभा हृग्रहृच्चतुरंगुलं
मध्यकंसप्तमार्द्धंवघसिकांचधिरंगुलंच
ऽऽासतेऽऽष्टांविज्ञात्योषोडशांगुलप्रमंके
वर्णनाभाग्रकर्तव्यं वक्षोचतुर्दशांगुलः
१४ चतुर्दशांगुलकर्तव्यंकक्षयोश्चधिरंगु
लंप्रोक्तंचत्वार्स्यग्रेचधिरंगुलं १६ नासि
कास्कंधलागंच ऽऽग्रेचसार्धमंगुलं तला
टंहर्षटांतरंज्ञेयं तत्रयमंगुलं १७ गले
दशांगुलंप्रोक्तं ग्रीवंतकिणमेवच ऽऽग्रीव
बरुपंच लागंच त्रिलागंविस्तारात्मन १८
निर्गमंत्रयंलागं स्तवद्विबद्धिकयमेवच
कटिबाहु हाणेपद्मौ ऽऽगुलीत्रयधी
मतां १९ दशांपंचनवेत्यादं ऽऽगुलेपि
डमध्यछि कधिलागयुग्मोयंविस्तरः
कयमेवच २० गर्भस्थानवलाघः क्षौद्रा
लाग्रघयमेवच द्वादशौछिनाजघाः ऽऽ
ग्रेचपिष्टमेवच २१ लाग्रं पंचयत्नेतः
चतुरंगुलषोडशः सिषट्लिलागः वा
मयादेवमध्यगः २२ उत्तकोरेलष्युवे

1557/1922

अरुपेरुपमाकारं विश्वरुपंजगत्प्रभो के
वलीज्ञानमुत्पिश्च वितरागो जिनश्वरः २
इतिश्रीप्रासादप्रतिमामण्डनविचारस
माप्तः इतिरूपाध्यवनारः समाप्तः श्रीः

गणेशाय श्रीवास्वक्रमाङ्गवाच गणेशा
यं नमस्तं सौ नारविघ्नसंसिद्धिहेतवेः
आदगवरीसमुद्भुता तेजससंस्थायची
१ मादा मायेतियागीता चेन्मयीमुनिस्त
मे करोत्ववाग्मवाला संज्ञेज्ञा कृत्यांचसर
स्वती २ श्रीष्टासूत्रधारस्य प्रासादावीश्वक
र्मणां प्रासादमंडनेबुतेसूत्रधारस्यमंडने
३ ग्रहेषुत्याविधिप्रोक्तोविनवेत्तोप्रवेश
ने अत्रेत्वावीकुषाकार्योदवतात्यतनेष्ट
पीठ हियाजेमतेरपार्श्वेचारुदारुवत
परं यावतज्ञाकरस्थानेतत्र सर्वज्ञीवा
र्चनः ४ प्रासादकारयुर्व्याप्ति देवदत्यादि
सिद्धमान चत्रदेशमुमुत्पन्नाप्रासादा
नांचजातयो ६ नागराधावीमावेव स्व
मिजालत्तिनासत्या ज्ञावंधावीमानादि ना
गराघ्यकंकिनाः ७ प्रासादमीश्रीकाश्चे
व मष्टजातिषुचो तमासर्वदेवेषुकर्त्तव्या
श्रीवत्सापीवी सेषना ८ प्रासादानांच
सर्वेषां जातयोदससेदत चत्रदेशांप्र
वक्षते नेत्यालोकानुसारत एवलक्षेल
क्षणतोस्य मागम मार्गानुसारत प्रासा
दलक्षनोदितो ९ अवज्ञानमवरूपते १०
शुलत्रेशुलेनक्षेत्रे पंचगृहबलान्वि
ते मासन्नाकंत्तिवज्ञा दानधीधर्म्मा
वाप्तिनि ११ सर्वदिक्कुजवाहावोप्रा
प्यंत दिक्कुमकरः स्त्रावा॥ स्त्रीयरी

देशांचवपंचगव्येनकोविद: ९ सणान
स्वर्णरुपेणविरुमेण शुलेनवा चर्त्तेर्प
टपदेवास्तुलिङ्गेप्रायज्ञानाशकैः ९ पीठत
वज्रेतेरुधीनतोवास्तुसर्वमन्त्राधु वोकेन
वाधानेनबलिपुष्पादिपूजने १४ ईशेन्यांचत्र
पतिनैरुत्यांवर्णोमरुत् ऊर्ध्वेरुद्रापत्तयपुर्वा
दानांदिशाक्रमात् १५ दिक्पात्राह्मेत्रयात्र
श्चेष्टिकास्तथा एतेषु विधिवत्पुजाक्रमाक
र्म समाचरेत् १६ धनमित्रसितेसूर्यगुरुशुक्रे
स्तगोविधौवेश्यनौत्पातियातेसेद ग्रहेष्टाकदाचन
१७ कंन्यादित्रिगेसूर्यद्वारंपुर्वाविधुतजेत्रास्त्र
ष्टाबंधमुखंतत्र स्वामीनोहानाक्रदते
१८ आयेवप्यहमंत्रेस्पतिनाथसुरार्चित
घनायोदेवतेत्रेत्रयासुप्रथमुक्ता १९ के
पंचमरुत्तंगेदशसिंहगजश्रुता हितयाया
वयाशेष्टापीशाचत्तसमोधिकं २० दिक्षानच
गृहेविंनांमायादंगंचत्तष्टयं नवंगनाभिवेदा
धीस्थापिकामितयोधिधा २१ आयादिचत्त
नेत्तुमिश्र ।क्षणंवासत्तुमंकलं सासनक्षेत्रला
भादिचिंतनंपुर्वंसास्त्रता २२ एवंदिक्षासा
धनक यीदिपसूत्रधुवैकपत समेतुमेवेदे
शेउक्तंकनोदिक्षेवा २३ नागवास्त्रास
मालो कोक्तयोनानांविधिसुधि पाप्ता
णंतेज्ञलनेवानतक्रर्म निवेशायत २४
यधोगुलनवेक्रर्म एकहस्तसुरालो
लय ऊर्ध्व-गुलततोहधियावननीधा
करविधि २५ एकत्रोशकरांतो चनद
शैदधारायोननतोधापित्राताधंक्रर्मो
मग्नगलोसोमः २६ चत्रयोशाधिकोडम
ष्ट कनीष्टोहानयोगत सोवलेसयत्नो

व्या पिस्थाप्या पंचमृतेनचा २ पु क्रमेना
दक्ष्मी कोणेधाग्निलास्थाप्या पद्मष्पणा
मुखाकुर्म्मशि पसाद्द गीतवादित्रमंगा
ले ब्रा बालदानंचनैवेद्येचाविधानंगृ
नेस्तुतं देवतास्य सुधिर्द ध्यन ऊर्म्मन्य
सेमालाश्चुच २ए मुत्तारसेगृहादिनो
सुनराय करंत्रये ब्राह्मपुष्पे मृगेमंत्रे
याष्ठवासावचारुणे ३० ग्नीलान्यास्क
रोहिणी श्रवणेहस्त पुष्पयोमृगे श्रीर्षि
सेरवंत्यामुत्तारात्रितयश्रुत ३१ तद्या
सीध्माश्रमेतीर्थेगृमेसमाधेरघरे वादी
वायीतप्रागादारभ्यान्यकार्येसुरालये
३२ स्वसक्काकाष्टमृचिष्टसेलधान्यर
त्नजे देवतायेतनेऊर्य्यान् धर्माधिकां
ममोदंद ३३ देवानां स्थापनंपुजापा
परीनर्दसेनाधीकं धर्मविधिसवेस्थि
कमोदेतनेनानृणं ३४ धकोष्टीजोत्नजनं
पुनंसनेयेदसमंगुणं पुष्ट केसतां
कोटीज्ञशैलेनंनपुग्रहं ३५ ऊर्म्मसं
स्थापनेदेरपदमाषाया वरसे घदद्य
वजघनष्टायंमवेपुनदसत्यकोड ३६
सोमारीतेनथाऊर्मसिला अंसुत्रपात
नेधरेधरेश्रेयांसे पटेयक्षशिलासु
च ३७ शुकनाशेचधर वेधेदायक
लसेनथा ध्वजोश्रीसुसंधेनस्थो नाना
चक्षुरदस ३८ एकहस्तादिमासादो
षावतहस्तसनधेनं प्रमाणंऊं सेके
मुजनासेकेसानाबाजेहा ३९ ऊंना
दास्वराणंच नागमेसमसुत्रन्पा
रसनीरगमबाजतथावथादकस्व

च ४० श्रीपंचसपन नवली फालाणानी
नीबजयेत प्रासादमंगसकाच वारि
मार्गनिरधीनाधर फालणाऊर्णडिला
वसऊधि गुणंमतंस्यामो नायंवीधी
३ लोहतं गुलसनीरगमं धर प्रासाद
प्रथमोरधा १ मासादनोमधीष्टानो ज
गतीसानीगदत्ते जथाजीहासनंरागन
प्रासादज्ञानथावच १ चत्रष्टोऽआनोर
श्रीयनाष्टाश्री ह्नाहना यसान घाजे
गतिपंचघाघोक्ताप्रासादस्यानुरुपतः
२ प्रसायनांमसोनोंच त्रीगुणेचचर्तुणा
ऊमानपंचगुणाघोक्तो ऽष्टोमधाक
नीहसो ३ कंनसेकंनज्ञाजेद्येजेष्टम
धेचमधमाधाज्ञादो जगद्तीकार्जेस्व
रुपोलक्षणनचनें ४ रससत्यगुणा
क्तानाजीन प्रजाएवज्ञाधाता क्षारका
यंचक्षनवतथावपुरज्ञानस्थे ५ मंरुपा
नुक्रमेणवज्ञापादंसनज्ञाधंन छागुणा
व्यायतकारजासहस्तायतनाबीधी ६
त्रीछिकन्नमंजुक्ता जेष्टामधाकना
ष्टका मुत्रायंचत्रासांग नास्त्रमृणीनं
चमुद्रेय ७ चत्रऊर्णेन धासुज्यऊर्णे
विभनिऊर्णकैं अष्टाविंशतीषट्त्यं
सा ऊर्णज्ञान्पंचफालणा ८ धास्पा
दाछाकेहतो नेत्रंसद व्यासनाचुसा
छात्रंसनिचत्रधासूत्रं सोचामधीरंभं
ए एकहस्तेकरेणाचो ज्ञाछधांसच
त्रकरे सुत्रयित्वा सानाधी तंक्रमान
धित्रीजगुंसकें १० नऊधायांसदा
त्याज्ञात्वष्टाविंशतिसिपदे त्रीपदो

जाप्यकर्मणस्य त्रियदं करणं कर्तव्यं ॥ पा
द्मपत्रसमायुक्तं त्रियदारसमन्वितं।
त्रियदं मुरकं कुर्यात् सप्तसागरवक्त्रकं
॥ कर्तव्यं त्रियदा घ्रात्मी सागरानंतर पत्र
के कपोतालात्रासागरा पुष्पकिंठे युगं
सके १३ पुष्पकाजाफलस्य निर्गमस्य
ष्टनोपदे कर्णपुष्पदीक्षा पाताघ्रा स्या
दपुष्पदक्षणा १४ घ्राकारमंफनाकार्यो
वक्त्रनिर्धारमंफपे मकारेजलनिकाशी
सोपानत्रोरणादिम्नी १५ मंफपांग्रघनो
त्यंगृसोपानशुफिकागृतो नोरणंकार
येत् नस्वपटं पटानुस्वारनवेद्य कपीर
रुपस्वसोनासिलुफलियुतं विवि चित्र
तारणंकुर्यादालंदेवस्यनत्रयः १६ तोर
णस्वन्योः धंनि विसर्गेगर्तमानतं लीना
गनिघ्रमाणनत्यर्थं मध्येघ्रवानवेतः १७
घ्रासादाछादनस्यानेकरणीयाच उक्तो
कारुकधित्रि चतुरपंचरसमत्यवंतरे
१८ अवर्यामनव्यंजनपंचषट्समत्य
नाक गुजनन्तीसनंतेधात्रि विक्षोवादनो
दयः १९ पादनुकुटीयावत् वर्यिवाद
नस्यदिक् दृषस्यचिस्नागसे सुर्यंघ्र
मस्तनांतकं २० जीनागृसमासरणंशु
कागृगुहमंफपं गुहस्यागृचतुरकाडस्त
दगृनृत्यमंफपं २१ क्रिमसत्यधिबांण
घचित्र विज्ञानिनोपि वाज्ञिनालश्रेय
श्चतुर्दिषुसहितांजनमंदिरं २२ मंफपा
गर्तसूत्रेणवामदक्षणंयादिशि अष्टा
पदं प्रकर्तव्यंचित्रज्ञालावावत्तालेकं
२३ अपरेरथसालावमरं वाम्येधनि

ष्टनं उत्तरेथइंद्रवघ्रोत्का श्रीवीश्च
कर्मणा २४ इतिघ्रासादजगति नाम गृ
नष्टष्टनश्चैववामदक्षतोपीवा घ्रासा दं
कारयदन्यनासिवेधविवर्जित २५ शि
वागृनवकर्तव्यं अर्चरुपणदेवता प्र
सानष्टानसोगायदथोत्तरादिवाकेर
शिवसागृशिवंकुर्यब्राह्मणं स्मवत्स
लाग्रत वास्करगृसवेधिफमुजिनोत्त
नोरवेरवि २६ इत्थावास्करकर्तसि
धास्यदोषानविद्यते शिवस्यगृम्यदेव
स्य दृष्टीवेधसदृश्यं २७ प्रसिद्धराज
मार्गस्य घ्राकारंत्तरत्नोपिवा स्वयंद
नदेवस नत्रदोषानविधनेः २८ शिव
स्नोदकं गुहमार्गचिंगमुषक्षिपत्
दृष्टीनुल्लिघयतत्रहानिघ्रनंघ्रराकृत
३० एकचमार विसर्पतो स्नोदघ्राधि
नायके चतुस्नोवा सुवेवस्य शिवस्या
र्घप्रदक्षणाः ३१ अगृतोक्षीनदेवस्यस्तोत्र
मंत्रार्चनादिकंकुर्यानोदृश्यस्मृष्टसत्मर
वेधरिघ्रनालश्चसमुत्तरे दृतिशस्तविवरो
यमाशरस्यानुदेवना ३२ मंफपायस्थिता
देवास्तेषयावामेचदक्षणे प्रणतंकासया
धीमान्जगत्स्यचतुरेदिशं ३४ पुनर्पिरा
स्यदेवानांकुर्याशोदक्षिनरुद्रा वीछसि
वाकें द्रगुहपुर्वापरासुरवो ३५ नगरा
स्निमुषाश्रेष्ठमध्येबाह्मेचदेवता गणेशु
धनदोत्तरस्थपुरेद्वारेसुरवावदाः ३६वा
घोरैरंचंगीनकुवाशोगरुस्तथा मातरो
धनदश्चैवशस्त्रादक्षणादिग्मुखः ३७ नै
रुत्यांस्त्रीमुषाकार्याहनुमान्द्वानरे
स्वरमन्येविदिग्मुषादेवानकर्तव्यकदा

161/1922

त्वेनोदय समः दस्मेसंयेगुणाहृधीया
वत्रिंशकरा विधी एव नवांगुलेरहृी
यावत्व दसशलाकं योगमंतव्ययश्चे
वबाह्यतो नागरादिषु १८ एकविंशा
स्यशलक्रमेण सादस्य समुदयो पचादि
नवलागंतधीरस्य पंचधोदयः १९ विद
वेदेकुलक्रमेणबाह्यतधीरमलकान्
षुरेकः पंचलागस्यानविंशत्रिक्रमलक
स्तथा २० कलशेष्टहिसार्द्ध त्रिकत्र
यं मंतरगरक केपोतिकाष्टा मलीकर्ते
मानवलागीका २१ पंचत्रिंशतदाजे
घातिथोशेरुद्रमालवेत् वप्रमिलर
णिकारजाली रायटीदशांसीका २२
ष्टांशोर्धकिपोताधिधिसाधं मत्तर लक
गाद्यांतयंदलोघादशलागेर्विनि
र्गमं २३ मरुमंडोवरोमंचीलरणीर्दृष्ट
नागिका पंचचित्रांतिकाजंघाऽमस्य
त्रयोदशा २४ अष्टसालरणीशेषंपूर्व
वत्कल्पयसुधी समनागालवेन्मो चा
ऊर्वबाह्यस्यमस्तके २५ शेरुशांत्रयु
नर्जघा तरणी सप्तलागीका शीरावली
वक्षलाग पटस्यूर्पंचलागिका २६ सू
र्यसिंरबाह्यो सर्वकामफल त्रिद
शकस्य युगंद्योन स्वावरणीप्रवेश
का २७ इमरुमंडोवराशिरावद्युक्त
मोमंचिजं घारुपाणीवर्जयेत् अत्य
ऽल्पमहत्युन्नंकष्टि तंविश्वकर्मणा
२८ इतिसामान्यमंडोवरधीर तबा
ह्यपर्यंतंसमाचित्रांतिलाजिनं धाद

ज्ञानोक्षुरादिना लागंतरमाक्रमेण
च २९ स्यादेकत्थदेशार्धं त्रार्द्धसा
र्द्धष्टत्रिस्त्रिभिः सार्द्धसार्द्धहिनोगस्य
सार्द्धद्व्यंशोद्विनिर्गमः ३० इतिग्रीवा
नंतरमंडोवरपादांशेतेष्टके पंचषड्
शैशैत्वदा रुजे साष्टारेष्टज्ञांशत्रिभि
दशैंशाष्टांशरलजे ३१ मध्येयुगासं
लग्नाद्यं शुलक्रमत्रिभिलक्रं फोलत्रे ।
जोगलं गृहदोषवगलंमायुतं ३२ क्रं
लकंतसमाक्रंलसंलग्नांतनुक्रमः ।
लरणावांतरणासीर्षकपोतात्यसमंत
वेत ३३ पटकेक्रगवादास्यक्रमात्य
टस्यटकं सषमोत्रांशपादं शमार्द्धगा
र्तस्यविस्तरात ३४ इष्टदेवालयेपटा
पत्रेत्रिखोदयः लजेद्दष्टालिकांशां
क्रलिलंलोनद्व्योवलो ३५ अंतलर
णंशीर्षमेकपटस्क साढ्रेकः व्यासर्द्ध
नकरोदस्यदरियोविषमाश्रुला ३६
इतिगर्भगृहप्रमाणः मूलकर्णस्यसूत्र
णक्रमेन कुंबलेसमः तदर्धः पंचर
नानिस्थापयेत् शिल्पिशुजनात् ३७
धार्यसत्रिलागं तमध्यमंदारकोलव
त् इत्तमंदारक्रंक्रंर्यान्मूणालपत्रसंयु
त ३८ जाम क्रंलकर्णालिंच कार्तिव
क्रंदत्ये तथानुदंबरस्यपार्श्वेत्रिशाषा
यासरूपकं ३९ क्रंतसार्द्धत्रिलागं
वापादहिनो उदंबल तद्वदेकर्णक
मध्यपोतीनावास्तमिका धंपे इति

चत्वार: शुरकेनसमांऽकेयादर्धचंऽ
स्यचोऽत्रि द्वारमवसमंदे धंनिर्गमंच
तदधान धर द्विलागमर्धचंऽचलागेन
धोगगारकौ: संषपत्रसमायुक्तं पटना
कारंरत्नेकस्तो धर ऽतियर्धचंऽ: ए
कऽ स्तेऽत्रा सादे द्वारंज्ञास्याऽऽगुल
षाऽज्ञांगुलकाद्दधि यवऽस्तवऽछ
दं धर यष्टदस्तंतकेयावत् दिर्धद्दधि
गुणांगुलाध्यांगुल ऽतिदस्तंचय वऽस्त
ज्ञानार्धकं धध यानवादनपर्यंकं द्वा
रं प्राप्तादसमनोदेर्धा ऽनेऽत्युत्वस्प
ज्ञेनतंतन्कालाधिकं धध ऽतिवागर
प्रासादद्वारं एकऽस्तसूरगरद्वारंसू
र्या गुलादय सूर्यांगुलाप्रनिकरंद्वा
धीपंचकरावधि धऽ पंचांगुलाचस
त्यांतंनचो तस्माऽगांगुलाद्धि गुलाऽ
ज्ञानार्धं तद्दधिकार्यांकतं प्रति धध
ऽतिनत्रिज्यद्वारं प्रासादं एकदस्तऽ
द्वारऽऽ र्यादज्ञांगुलो दसद्दस्तकंया
वत: तावतिद्दछिरियते धऽ पंचांगु
लादसंतचचांगुलाचासनार्धकं ऽति
ज्ञाविऽद्वार: विमानेलोमऽजोमाने वरा
टेषुतऽचव सिंहकेलतिने ऽचैवऽत्र
ज्ञास्तंनागरेस्वं धऽ विमानानागर
बंदे ऽकुर्याधिमानऽष्यकै सिद्धाविंऽ
कनेद्वारेनागरंज्ञोलनंमतं धऽ वंऽ
स्योलोमऽजेमानफलागारंऽप्रज्ञाविमो
ऽनऽजेरनऽजेऽचैव द्राऽऽजेचरुथाऽऽचैव

धऽ ऽतिद्वारप्रमाणे ॥ नवांसाधमंदेस
स्यदेवानंस त्यज्ञाषीकं पंचसाधंसर्व
लोमत्रिज्ञाधंमऽतेश्वर धऽ एकज्ञाधं
लंवद्वारं शुऽचैवस्य द्विजेसदा समज्ञाव
चैप्रायेस्वानुरूपलवायंस धऽ त्रिपंच
सप्तसंदाचैषांस्तंरंगुलत्यकं हीनज्ञा
षानकर्तव्यंमधिकाद्योसुषावद्या धध
ऽंगुलंसार्धं मर्धवाऽकुर्याद्दानंतषाधिकं
ऽत्रायदोषऽवि शुद्ध्यर्थंऽस्यऽद्विजनऽप्यते
धध चऽत्वारिंशाकिंतंऽकुर्यांज्ञास्वाविस्तरमा
नकं मध्यद्विलागिकऽकुर्यांस्तंभस्तरस
संज्ञिकं धऽ स्यसंज्ञिकालंवेतज्ञाषा
पार्श्वतिलागलागाऽक तिर्यग्वैकलागं
नमपस्तंभप्रज्ञास्यते धध एकंज्ञांसार्धं
लागंचपादनऽत्यंसचव द्विलागंनिर्गं
मऽकुर्यांस्तंभप्रमानुसारन धऽ घिटके
विस्तरंकार्यं प्रवेशस्य व्ययुगांशकंकां
णीकास्तंभमध्ये शुक्लमणीयंद्विधा
र्यंति धध द्वारंऽऽर्धवऽर्ध्वं ज्ञोद्वारपादो
विधियंत स्तंभसारवादिकंज्ञोषत्रिज्ञा
खंविधिलाजिनं ६० ऽतित्रिज्ञाधं: पत्र
ज्ञारवांचगंधर्वारूपस्तंऽतचतियक: वऽ
थीषत्यसारवाचसिंहज्ञारवाचपंचमी
६१ ऽतिपंचज्ञाष॥ पथामापचसारवाच
गंधर्वारूपज्ञारिचचऽथीस्तंगज्ञारवाच
गंधर्वाऽतथसंचमी ६२ षष्ठीऽषुत्वज्ञारवा
चसिंहज्ञारवाचसत्यमी सप्तज्ञारवाऽतवे

मेधेरूपशाखागसूत्रना ६३ इतिसप्त
शाखं ॥ षष्ठगंधर्वसंज्ञाधरूपसंस्तन्त्रिय
कः चतुर्थांषष्ठंशाखाचगंधर्वोत्वधपंचमा
धरूयसेत्तसंस्थाषष्ठारूयशाखातनथ
रा षष्ठंशाखाच सिंहरवामुलकर्णेनस्त
मीता ६५ यस्यदेयस्यायामुत्ति सर्वकार्यो
शरंगके शाखायंचपरावारो गणेशशोत
रंगको ६६ इतिनवशाखं इतिश्रीसुधार
मंडनविरचितेप्रासादमंडनेवा स्तुशास्त्रे
त्तिप्रंमंडपवरगर्तएलक्षवंलक्षण्यमाण त्तति
योऽध्यायः॥ द्वारोत्तुयोदुनवधाभागमेकं
परित्यजेत् शेषअंशेत्रिभागावाहसंशोभा
स्यात्तथवा १ द्वारदैर्घ्येत्तिव्यांशोत्तिथि
शांककलांशके ३ ऊर्ध्वआसनशाखामे
त्रिश्वार्कस्तीगत २ चतुरश्रीकृतेद्वेचेत्र
शंभागत्रिभाजितेत्ति त्तितिद्विभागकर्त्तव्यं
षड्भागंगर्तमंदिरे ३ इतियंसेनगर्तस्य ४
प्रासादस्यतिमात्रमा मध्यमीस्वदशांशेन ५
पंचाशीनाकनियमी ६ आयलाभेनजेत ७
२ मष्टमंचधर्जंवर्जेत् सत्यमासत्यमेदृष्टि
वृषसिंहेद्वजेच्छस्ता ५ षष्ठीभागस्यपंचां
शे लक्ष्मीनारायणादिदंडकशानाच्चत्रि
लिंगानीद्वारदैर्घ्यतिक्रमात् ६ षट्शि
यस्यस्तंभाद्या पट्टागंदेसर्वदेवता तदा
गंदेविद्धवंशस्था मध्येलिंगत्रिकस्यच
७ इतिप्रतिमाप्रमाणं दृष्टिपदस्थापनं
बाह्यस्योर्द्धप्रहारस्यात् स्वंमअंगेनद्वै

वंप्रासादअंगप्रत्यंगेषु अधोभागेतुनाद्ये
कंठे मजकर्णेरथादेवा एकद्वित्रिकांमां
शसेत् निरंधारेमुर्जासत्ति संधारेस्वमसि
त्तिसप्ते नवमेअगाणिसप्ते सारेकागव
दृसंख्याः त्रयोदशेहिसत्याधो एकत्या
क्षेकत्यानिवोरुगके १० रेषाफलस्यदि
ऽसागं कुर्यादेशषमशकं षष्ठाहोदोष
दंप्रोक्तं पंचमध्येनशोसनं ११ सपादंत्रि
षरंकार्यं सकर्णेत्रिषरोदयं सपादकर्णे
र्यामध्ये रेखासुपंचविंशत्ति १२ प्रोक्ता
रेखाकलासैदवरणेयंचविंशत्ति पंचादि
नंदयुग्मंतरखात्तिवानुक्रमात् १३ अंशा
दृष्टाकलाकार्या दर्धे स्कंधेपितस्यमा
१४ अष्टादावष्टषट्मांतंच त्रयोभागषो
क्रमाः देर्घ्यज्ञेयः कलास्कंधएकहीना।
स्कंधोत्तमा १५ उर्ध्वमष्टादशांशा स्युस्ति
र्यग्विषेफलाएवंच वास्तुमानमवेत्यवे
षणेषट्शरद्वयः १६ त्रिखंडान् खंडृद
दृष्टिश्चया वदष्टादशोवृद्धः एकैकंशो
कलाष्टाचत्वारिंशमावार्यस्यषोफलं १७ द्वि
तियाषष्ठमेखं मेकलष्टौद्वितीयेनच
तृतीयेदशखंमेषुनेषुर्घेषुयक्रमा
त् १८ अष्टदक्सूर्यस्यांगाश्चत्रिखंमे
तृतीयानवेत् अंतनकर्म योगेनको
ष्टानिकौघ्रयुरयेत् १९ इरखणीजुय
तेसंख्याषट्षषंचाभ्रशतद्वय द्विर्धस्ति
र्यंतियावत्याकलास्कंधपितत्समा २० इ

तिरेषविशत्या विभेजन फलं शिखरोत्सेधक
लशांतकोमफलं वरोहसार्धदृष्टनवां
शशिखरपरं २९ रेखामुलस्यविस्ता
पश्चांशसप्तविंशत वंशगुणनमुलं
एव सपादशिखरोदय २१ स्कंधकोशांतरे
सह सक्के गायाउसांगत्त सार्धमामलसारं
चय यपचेउसाधव २२ विसागश्चकर
शो विसागस्तस्य विस्तरः प्रासादशीर्षमं
शनपथुत्वंकलशोदकं २३ चाद्यस्यरकं
धपर्यंतंएकविंशतिसाजिने अंकदिक
रूपसूर्या शेविश्वांशेसस्यवोद्धृति २४
नासस्यसंस्थानेवाद्यो र्धपचधामत्ताए
कलियंवसप्तांकंसिहस्तानिकल्प
येत २५ घरस्यदक्षणेचमेकपिंडिकं
विधामतानवर्धश्रकनसस्यशेषप्रासाद
नासिका २६ प्रासाद्दोदसस्तारस्यधि
त्रिवेदाचसंमिता प्रासादार्द्धनयादेनंत्रि
सागेनाथनिर्मित २८ अंगोरूअंगयस्य
गै स्त्वंकातगणयेसुधि सवांगचिल
कंकर्णेकुर्यात्प्रासादलक्षणे २९ चाद
शंगशिखरमुजे अंगृतत्रतपत्रांके सर्द्ध
सकोरथांकोलोद्धोनषसद्भिष्यनेउ
रथजांरुलयो मध्यहनंमाप्रसारकं
नवधांविस्तरार्द्धं नवउर्ना गविना
जयेन ३० गवाक्षमलसार स्यपादो
नाथसप्तकं वंशकालागमेकनतो
गे मामलसारिका ३१ घनपात्रेन्य

मेनमध्येतारस्तुचर्णेजं नोवर्णेधुरु
षंतत्रउद्धिपंचंकशायात ३२ प्रमाणं
धुरुषंसार्द्धं गुलेकव्यंकरश्चिं त्रिंश
नाकरंवामकुक्षि स्वदक्षणबुजे ३३ स्क
धकोशांतरं सप्तग्रीवालांगनवोर्ध्वतो
सार्द्धमापत्तसारेचपद्मपत्रंचउर्ध्वकं
३४ प्रासादहस्तदेशोदक्षिणश्चतिर्यं
कं प्रजाधारस्कंधलंभेनसंस्तंत
था ३५ इतिप्रासादस्योर्ध्वलक्षणं क्षीरार्णे
वसमुत्पन्नाप्रासादस्याय जातकं मो
गलेषुवसर्वेषुकलशंस्थापयेत्तबुधः
३६ इतिश्रीमावास्तोष्टषोडशांशोधिकोसंपू
कोसंवेत् ऊर्ध्वांशेनापिमध्यंतनवांशे
नादयोसंवेत ३७ ग्रीवापीतसंवेत्ता
नोर्ध्वकंकरणंकंतथा कर्णिकासागच्छ
त्प त्रिसागंवेदिपुरकं ३८ इतिकल
शः दंडस्तत्रीनीयंशेनत्रिशांतः कल
शांतकः मध्यष्टांशेनहीनांशः ज्यष्टांश
चकन्यशाध प्रासादप्रथमानेनदंशा
ज्यष्टः प्रकीर्त्तिताः मध्यहीनादशांशे
न पंचभांशेनकन्यशाध एकहस्तेन
प्रासादंदंडं पांडुनमगुलं कर्यादिर्घं
गुलाद्धियंचित्यचदसहस्तकं ध
सूत्रसारदारूअंगंथीकं कंटवर्जि
ना पर्वसिविधमे कार्यासमगंथासु
रंवावस्त्रा ध३ दंडार्द्धचपंक्तेशन दैर्ध्या
नवविस्तर अर्द्धचंद्रांक्तिपि शेर्द्धं

नीयं अजयोलक्षं स्यजेत् २७ प्रत्यंगंति
लकं क्रमतिप्रतिरथं विमानाकः सद्रक्षं अ
गवैसालप्रतिरथं सुसुसणं २८ इतिपंचांगायंच॥
चतुस्रचष्टत्तिलकं करणप्रतिरथस्तद्वत्सांग
सांगंचसद्रक्षनत्रतिरथं २९ वारिमागतिरथयुता
रथस्यात्तत्रनिरथं न्नागव्यंगपवृत्तिलकं करणं
घंटप्रतिरथं ३० एकंचोपरथस्तद्वन्निरंगंचली
चतुर्दशंचिषरंपंचविस्तारमाह दासज्यदा नृ
णं २ एकएणंमानवेदशेषपूर्वसद्रक्षनरार्धकं स्य
क्कांकअंगासद्रस्यमत्तालंबकंकारयेत्तत्रसमस्त
कंतस्यबादस्यअंगयुगमद्रदापयेद्वासनश्री
गंस्तदानामईश्वरस्यमदोपियं ३३ तिलकनां
म्नासुयद्धुपरथंसदृशंनामनीमतं बाद्यअंतु
तलकनाम्नासुवमंगहृतं ३४ श्रीवत्सयंचोपरथं
तिलकंकारयेत्सुधिनलोकांविजयासद्रक्षं
ज्रोक्तीतीचबलस्य ३५ शतिसस्यांगसत्यादत्रालांग
कृतंक्रमेलद्रक्षनागमानंत्रयप्रतिरथा
कर्णसांगसलालवेत्रकंकर्णप्रतिरथेत्ता
दृक्षंअंगप्रकारयेत् रथोपरथलिंग
कं प्रत्यंगंचरथोपरि ३६ मत्तालंबयुतं
सद्रंप्रासादोयंमद्धर सद्रअंगहृतायं
चकेत्राद्रांगकंप्रियां ३७ सद्रस्यत्का
रयेत्अंगं नवमालसद्रक्षते तथालद्रंतु
नर्दयात् तदासांगंधमादन ३८ सद्र
स्यक्कोचोपरथेअंगसंवांगसुदर सद्रद
द्यात्तनअंगविजयानंदनुक्षत ३९ म
द्रंबयुतंसद्रं मुरुअंगपरित्यजेत्तः

अंगद्वयंचबाद्योद्वसर्वगात्तालकंसदा
३१ उरुअंगंनतोदद्यात् मत्तालंबसम
न्यांतं माहालोगस्तदनामसर्व देवस्य
जित ३२ प्रदक्षणात्रयंस्पर्णं मरुपं
सांचयत्कलं एष्टकाद्रोलजंमेरुस्पा
त्रंतत्र दक्षणिस्तन ३३ वैरज्यंप्रमुषा
यंत्रनागरावृक्षणादिति वक्षेसामद
वानोशिवज्ञाधिविद्रोषत ३४ इतिश्री
सूत्रधारमंडनविरचिते वास्तुशास्त्रेप्रा
सादमंडने वैरज्यादि प्रासाद पंचवि
ंशत्याधिकारेपंचमोऽध्यायः ५ के स
रासर्वतोभद्रनंदावर्तालकनंदिसामंदि
रं श्रीवत्सोद्वयसामृतासव १ दिमवा
न् हेमकूटस्यकैलाशोऽथविजय
इंद्रनीलोमाहाना लोसुधरारत्नकू
टक २ वैडूर्यपद्मरागस्यवज्रकोमु
कुटोज्वर एरावतोराजहंसागरुडोदृ
ष्टलक्षणं ३ मरुप्रासादस्य देवतामल
योद्यासद्दक्षविप्र शिवार्कीणांनाम्न
षांवकदाचन ४ आद्यपंचंडकोष्ठेषु
केसरीनामना मतश्चतुष्कंकमतोदृ ?
यावत्रेकोत्रशंतं ५ क्षत्रेष्टशंविस
क्तं ६ कर्णीसाघयेत्सवत्र सद्रार्धक
र्णंत्यक्त्वा चलांगेनैकनिर्गमाः ६ र
थांशेसार्द्धभागंचसर्वत्र प्रतिरथेक
र्णेद्विभागमुर्ध्वंमे सद्रार्द्धंच प्रति
रथे ७ चतुर्दसविसक्तं वुकर्णेद्यं
द्वादशांसतः सद्रायाश्चत्वोकार्या

169/1922

नागलोगनमंदिक ८ षोडशांशोपकेत
आकर्णत्रिनिरंध्रारे कोणिकानागजे
त्यांचशंषवर्जदशांशान १४ चतुरश्रीकृ
तेक्षेत्रविंशत्यं शविलाजिंतकर्णविना
गकाणेविंशार्धं शांशयुविस्तरो १०हि
तास्रकप्रतिरंध्रा नदिकासार्द्धनागिका
नद्यंतेदात्रवेद नागलहार्द्धगमनागिका
११ छत्रीशत्यंशकेनंदिनागकन्यया
स्थेयो त्रयप्रतिरंध्राणिनद्यंघ्रिहि
नागिकं १२ एकद्वित्रिकंत्रिगवे
दाश्वत्यारिपंचच नलक्षुत्रसतोष्टानुक
प्याकृत्रिंशरणिहिग १३ अष्टादशांशा
सकस्यपार्श्वेद्विकचनंदिकी कत्रयमाना
गनागनखेषंस्यात षोडशांशान १४ त्रि
पंरेस्यकवेदेकषक्त्रिंशद्युगद्वयंन
लेक्षुक्रमतोग्रेक्ते मूलसूत्रेपराजिते
१५ नलांघ्रष्टांसुविहिनाग्रामादापंच
विंशति त्रयःस्त्रयक्रमेणवनत्वरस्त्व
ष्टमनंर १६ त्रिणित्रिणी स्वकीयानिद्वि
द्विपरापरस्यत्व शिषराणिविधियानि
विश्वकर्मवेदोक्तया १७ द्वित्र्येकषट्
त्र्योष्टादितलेक्षुपंचमुक्तमान मनो
वसन्यमषष्टांशिरद्रित्रिणिवाष्टमा
१८ नदापांचोशंदेकेक ग्रोक्ता श्रीवि
श्वकर्मणा नानेकमो सलधिस्मृतीज
राणीवक्रुन्यधि १९ रथिकाभिकर्ण
चलद्रुक्र्यागवाक्षकान प्रत्यंगमो
ला काद्यैचसुनिनमुरमंदिर २० ग्रा

नादाकेराद्या श्चसर्वदेषुपुजिता पुरा
राजोदिनि कत्रुकत्राणेकारकार २१
तिकेशस्पाद्याग्रासादपंचविंशति प
ड्त्रिंशत्कतोधस्तायावधस्त चतुष्ट
यं विनाग्रद्वौनिरंध्रच कर्तव्याशांनि
र्गमति २२ वास्तुपंचविधंक्षेत्रंचतुर
श्रीमद्यायतं दृतंदृत्रायतंचैवषष्ठाश्रंद
वालयादिषु २३ विस्तरेत्रयत्रलांगं
त्रायमेपंचलागिके गर्भत्रिकलभानु
क्रमेणैगनुसिद्धकर्णिकं २४ हस्तादा
रभ्य षोडशव्यासार्द्धं वामदक्षिणे कर्णति
स्रमेव क्रमेद्वत्रेनद्यांघ्राणीवाष्टविंश
ग्रासादेद्वत्रेलाष्टा स्तायेणेकंनुक
मात: वेलिवासणेडांतीमडपेनस्व
रूपंकं २६ इतिपंचहस्तालि विचित्र
रूपशंघातेनद्रे गवाक्षसृष्टि विताते
फालनाश्रृंगरनेकेनागरामता २७ वि
न्यरिलवेदिदिगनियोत्रिपंचच वि
रतोद्राविहेरस्वालना शृंगादिभंयुत
२८ भूमिकोपरि भूमिश्चस्यद्विद्वि
वद्यतको विसक्तिदलसयुक्ता मुद्यं
गेणभूमिज २९ अंगनेकेनलनिनाभी
वम्बवारिभंयुता नागांत्रामसंयुक्ता
संधारसंत्रकितिता ३० इतिग्रासाद
नामक्रांतव्यापंचहस्तो सवेनिरूपको
त्रयंशांतोदक नोदापंचोनपंचाशत्क
रहस्तभयंतेन ३१ हस्तादस्तनवद्वि
द्विस्तंडकानावविंशति: एकोनरस

हस्तास्यात् शृंगणेचत्रीतेर्हके ३२ केस
रिप्रसुखा कर्णविमानाचोरुश्रृंगकैन
वेक्तुरशिखरेपंक्तिमि विमानकं ३३
र्धवैमाननागराजाति सदाग्रोद्वेरुदा
ऊना एवंशृंगेशुशृंगाणि सत्तवंतिच
ऊर्ध्वपि ३४ श्रीमेरुरत्नागस्यैर।
कोत्र ऊर्ध्वनंडका दे मशिरषदशाच
युक्तसार्धज्ञानं के ३५ नागेंद्रा दशाति
युक्ते सार्धत्रिंशासंयुक्ता सुषलसना
संयुक्ताका श्रीविश्वकर्मणा ३६ कर्णे
विलागएकंशा कोणिसार्धप्रतिरथ
अर्धसानंदिकामुद्धिलागेनसमिति
३७ त्रिंशतंपंचसप्तत्या कवशंडकां
नहा लक्षांश्चत्रदशासेतना स्तालवत
मडनः ३८ कोणेकोणीप्रतिरथे नंदि
नशार्धमवच एकधार्धं सार्धं शैश्च ३
दशा विलाजंत ३९ वेणेकवेदयुग्मं श्र
वेदाकर्णदिग्मर्तन रत्नशिषिनवेत्रसु
पंचशतेकशृंगके धं गुलेकयुगमेका
द्विशरविंशा विलाजिते किरणेऽवेम
श्च सपादषष्टतंऽकोधा गमवेऽद्रियु
गंशनेत्रेविलतिखिलाजिते नामाकले
हंसस्यात् सार्धत्रिसार्धके धास्यंवस्व
र्णकेंत्रश्च पंचसप्ताष्टशृंगके धरवे
दे करांशयुगांशांतजीवनविलाजिते
शषसहजमरश्चरुश्चसेकांऽकसहस्र
वान् धश्च मनुयोत्तमदिनश्चमाद्रिमरु
त्तमध्यं सांधारेयुग्मकर्तव्यनंऽवेत्रा

वलोकनि धश्च राहुस्यात् शथमाभ
रु मनोदिनोम्यवर्णजा विनाराहोम्य
वर्णनेऽनेमरुसरुद्रयं धरं इतिश्री
नवमोरुलक्षणः इतिश्रीसूत्रधारम
ननविरचितेवास्तुशास्त्रे प्रासादल
क्षणेपंचक्षत्रपंचचत्वारिंशन्मस
लक्षणेषष्ठोऽध्यायः ६ रत्नगर्भकर्णे
सूर्यविंशानारिता नकंविधि त्रंऽडपे
जनऋतसैनमः सदा १ एकत्रिंशा
संयुत प्रासाद गृहकर्तव्या सर्वदेव
स्यमंऽपा कर्णगुहोविलोकास्यएके
त्रिंशायुतः २ प्रासाद गृहकर्तव्या
सर्वदेवस्यामंऽपाः गुहस्तिकस्तथा
नताऽऽमेणमंऽपास्तथा जिनास्या
गृहकर्तव्या सर्वपात्रबलाणं कोश
समंसपादं प्रासादार्धं सार्धपादोनत
ऽयं धिगुणावा गृहकर्तव्यं मंऽडपं
चधामतं ध समंसपादपंचाशत्य
र्यंतदशादशाऽस्तकं दसंतपं चतमा
ऽधिपान्यनवऽकरं ध त्रिऽस्तधिगु
णं धिकऽस्तऽर्यावत्त किको प्राश्य
णमंऽपं सार्धं धिगुणोधत्यंतदकेष
मंऽपे संसत्यद्येवमध्यपटानुसारत
मुकनाशषमंद्येटा नुन्यास्तेष्टानवा
धिका ७ मुषमंऽपसंधानोयदा
स्त्यंतरसंवत् नदोषः स्तंभपटा
द्धे समंचा त्रिषमंतलैः ए नबाष्टद
शासांशु त्रिसिश्चत्रावलोने त्रिगु

रुकार्ये मंडपाविधूक्रमाणि नेलस्त्रवि
यमेवले रुणेसंनैः समेसया २५ प्र
थमोधादशास्तोधिः धिःसंनविवर्धना
त् यावत्षष्टिचतुर्युग्माः समावंशास्ती
मरुप २६ कोत्रार्धश्चषडंशोना एकास्ता
आष्टास्तज्ज्ञेते आष्टास्तेषांशा स्तेच त
तकजी २७ कोणर्डरि कासप्ता सागोन
निर्गमाथिता रुपकोतस्तुर्ये वांशेधि
सागस्तस्यनिर्गम २८ विद्याधरैः समा
युक्तोषोऽशाकष्टि समिता जिन संरचे
युतोविश्वा दत्तेविराजि २९ विद्याधर
पृथुत्वेतु सप्तांसानिर्गमे दशा तदुर्ध्व
वत्र रुपास्य न्यर्त्पत्यः सालत्रंजिकाश्च
गजनाल्युः सर्वषांशि रादाषड्भिर्दनाय
का दशियासार्ध पंचशे कोलानित्रिपंच
वा ३० मध्य वितानकर्तव्ये चित्रवर्णविरा
जित पुराणादिक पात्रंच नानाकारे विरा
जितं इह एकादशशानानेषांवीतानानेत्र
येदश शुक्लशंघाट मिवांशि छिन्नाछि
न्नानिकानिच इह वितानानिवचित्राणि:
द्यद्यो चित्रादिसदनमस्त लोक एकत्र
मं तस्मादूर्ध्वनिलोकन ३१ संडपेषुसर्व
षु पीठांतरं शलाभिका कर्या छत्तानिमा
दनाचित्रपाषाणजनच इह छ निमेऊया
वलाणंदेव गृहागृहर ऊलोमध्यकर्त
व्यसर्व षामुपसंहन ३२ जगतीपादवि
स्तिर्णं पादया दनवस्तिनः शाखाविदे
न गर्भेणप्राशादेन मसंवेत ३३ कुत

135 N925

मेकंत्यसमंध्यमधंनेष्टत्कन्मसं एकद्वि
त्रिचत्वःपेचरसप्तग्रमदांतरे इए मुल
प्रासादद्वारमंऽपेवबलाणं केनुनाधि
कं बोकमेवी वेद्यदिसगुर्नेऽधिको
ध्रुव पादेकंचांतरंगानां सर्वेषां समस्त
त्रैतत्प्रमाणं नसमंपेदोऽजगत्यांक्षानरं
गाजं धरं जगत्यंगृहचुछ्रयावा प्रानंत
बलाणंर्कवामथदक्षणे द्वारंदिदिका
मत्तवारुणं धरं उर्ध्वसूमिग्रकर्तव्या तृ
त्यमंऽपमुत्तर समसंवारणंवेदिबिंबा
नंतारणंयुतो धरं राजद्वारबलाणंवा पंच
वासप्तप्रमिका तद्विमानंबुधोग्रांकं यु
ष्कवारिमध्यतधरं सेर्म्यजालेगहवा
धिकर्तव्य गायुरांतनि रंकसूत्रोस्तिसूत्रो
तं गृहायार्द्धरिसमकं धरं इतिपंचवि
बालाणक संवणग्रकतत्र प्रथमापं
चघंटीका चतुर्द्धाविहधांच पायंदे
कांतरंसतधरं पंचकंप्रतीयुक्ता प्रथमा
वास्तुनागिकोवेदोत्तरंज्ञानंजावत्तवेदं
सविधिरिष्यते धरं सप्तार्द्धरश्मिकार्ध
न तवांऽवासदिक्षणे अर्धादियारश्मि
का घंटाकूटंतवांऽगकधरं कालाकूट
न्विता पूर्वापंचनिःकलशैर्युता नाग
त्रैप्तस्तयास्पिदेर वामनाश्चलक्षणंत
धरं इतिश्रीप्रडपस्यार्धसवणा इति
सूत्रधारमंडनविरचिते प्रासादमंडने वा
स्तुशास्त्रेमंऽपबालणाधिकारः सप्तमो
ऽध्यायः ७ अथासाधारणोध्यायः सर्व

लुक्षणसंयुक्तो विश्वकर्मप्रसादन
विषेनऽपकथते १ सानुन्नाधिको
वापिस्वर्यंस्त्रबाणरत्नेघटितेषु
वित्यत्वः मर्चालेगेषुमास्त्रन्त्र व
क्ष्यालेपंचसमसंधिशिरोगुरु
सत्रात्मंपादहानंवते द्यवासुविन्य
स्यति ३ क्ष्मत्यवास्तुवितद्यंऽमत्य
वास्तुतिवेऽमति प्रासादनसवेतपूजा
गृहेजनवसत्यंजेत् ४ स्वस्थानेसंस्थि
तंयत्र विप्रवास्तुशिवालय्यं अचल
ग्रावदिशेषु वालिनरा छविस्मं थवा
पिस्कपनडागानि प्रासादलावनानी
व जीर्णमुधरंत्तजस्तः पूर्वसूत्रंनद्या
लयेत् हानिस्तुजायतेहानि धिकस्व
जनक्षयं ५ वास्तुद्रव्याधिकंऽकंका
मृन्काष्टशैजलद्विवा शैलजेधात्तजं
अवधात्तजंरत्नजंद्या ६ पूर्वोत्तर
दिशामुखं समुखंवायत्रिभिश्चसमा
हिता द्य सिद्धयेतनत्रिंधे शुनदानं
संगमेषुच स्वयंस्त्रणं तेगेषु क्षत्र
देषानविश्वेत १७ अथऽपकृमत्यंत्र
त्यो त्रिहस्तंतनुशैलजो दारुजंषु
रुषार्द्धंच अनन्धंतवालयेत्त १८ वि
षमस्थानंमाश्रित्यंसमस्थापित
परे तत्रस्थानेस्थितोदमा सग्राषु
स्याफलप्रदा १९ यंयथास्थापितं
वास्तुतत्रैवदिक्कारयेत् अथ
गाद्यानि तेतस्तु दारुणकरुतंन
यं १३ अथातवालयेत्प्रजाण।
मगवपितं आचार्यशीलसिप्रहो

शास्त्रदशांशयमुरेन १४ खर्णजंशेष्यजेवापि
ऊर्ध्वनिर्गमधोवृषं तस्मश्रृंगोणादंनेवा पती
तंयातयश्मधा १५ इतिजीर्णोद्धारविधि संपूर्ण
जालकंचैव कालकंसुरुषंडनघा चिर्जसं
धागराश्च माहादोषाऽनिसमृता १६ सिन्नं
दोषकरंयसमान् प्रासादमन्तमदिद मु
क्तामिजालकैर्घाटे २समैवानघसंदनं २
७ ब्रह्मविष्णुशीवार्काणांसिन्नंदोषकं
टनस्थि जनगौरागणेशानांधासाद पिन्न
चर्जिता १८ व्यचत्कंमृहं ऊर्ध्वान्तदस्ति
न्नासिमुक्तयं यथास्वामिसरिंस्थान्
प्रासादमहिनादमं १९ एऽतिसिन्नदोषा
सिन्नच्छविवंजेयं मिश्रधमिश्रकंमतं २
मिश्रकंपुजितंनत्र सिन्नवैदोषकाऽ
कै २० वंदसेदोनकन्नमिंजातीसेदोसं
घायुन कृतदंनेमहामर्मजानिसेदोक्तं
नेमतिश्च घाटहीनेनघेदुन्नासिदा
नेधनक्षयं अपदैः मघातःसंसि महादो
षश्चतिस्मृ ता २२ संसवासोदयेहीने कर्त्ता
विनश्यसंति प्रासादपीठहीनेषु नसंतै
राजकाजिने २३ रघोपरघहीनेऽ प्रजा
घाऽविनश्येत २४ जंघाहीनेदरंबंधु
कर्ष्टकानकारकादिकान शिरवहीं
नेमानऽ पात्रंपौत्रंधनंक्षयं २५ अती
दीर्घोकृतेऽशेऽडुस्वेऽधिसमुन्नवं त
समाद्यास्त्रोक्त मानेनसुपदंसर्वकाम
दं २६ जगृत्यानंतोपपेशालं शालाया
चैवमंडसमेऽपे नस्यासादोग्निस्तोवेदो
षकारक २७ इतिदोषः॥ प्रासादोद्वय

नक्षत्रव्यातछालेगस्यपीडकाऽ
जगत्प्रास्त्रिचत्रः पंचगुणंदेवदुरि
त्रधा एकाधिवेदसादक्रोदस्तेस्याऽ
जमंदिरे २८ कलाषृवेदसाहेन्नेहर्सऽ
ऊपुरसमं दंधर्मनुन्यासपादाष्टसाऽसि
नाधिकंभुसंऽ २९ घादशात्रिपुराणिस्मुंद
वस्यानानिवन्नोरे षऽिशतषडिवृध्यो
धिरूचेत्तातं ३० पुरंघासादहवैश्व त्रोवि
र्जत्वगवाऽकैः कान्तिस्तेसोऽऊत्तरामे
गंदमडिसु सोसितं ३१ शतिंदवपुराराज
पुराणा प्रासादोनेरपामे नघाग्नाय
श्चि यत्तिनामा श्रमेऽऊर्ध्वनमंनेनदि
विसुमिकं ३२ धिशतंमधषट् तारासू
पदशालागृहोसित मन्नवारणंमगुच न
केऽधसुस्मिपु ३३ कोष्ठागारंच वायव्ये
बऽलागमऽनास पुष्पगेहंतघसानै ने
रूत्यपान्नमायुध ३४ कोष्ठामत्रागारंच
पुरनोवारू ... एयंचजलाश्रय म
तस्मोपरतः कर्यधिघाग्नारव्यानव्यान
मंडपं ३५ इतिमतः पूर्वो क्तासप्तपुरुषह
तिष्ठासर्वसिद्धिदा सौसौम्यायनेऽऊ
र्यधिवानांस्थायनादिकं ३६ तिष्ठावो
तरामुजऽत्राऽप्यचत्रनवसे पुष्पेहस्ते
मृगेधस्वातिरोहणेऽप्रुतिमेत्रतें ३७ चि
रस्त्रीऽऊधिकयऽ ऊरविघंयुतंतघा
दग्धांतिथिचगेऽजातं चरस्थायगहंत्यजे
तेऽ ३८ एस्तदिने सुमुऽहूर्तचित्तमे सौम्याय
तेकिते ३९ प्रासादागेतघैत्तातिऽत्तरसं

1391.1922

ङपंश्चुन्त्रिपंचसप्तनवैका दशत्रि
श्चक्रांतरे धा मंडपेस्थानत्रयेष्ट दशस्
थं कैलासिनं षोडशावरणैः ऊर्ध्व वा
ग्रादधि कादशेत धा मं रागजितं मं
त्रयं वदिकामध्य पंचाशानवकुंभ
कं धा इस्तमात्र नवकुंडं मेखलायो
नियुतं ग्रा गमवेदमंत्रैस्त हो
मंकुर्याधिधानत धा ग्राद्यनवस्त
मात्रवलाक्षा द्वंत्रधिरस्तकं त्रिहा
स्तलक्षहोमस्यदशलक्षेचत्रकुंड
धा त्रिशीलक्षेत्र्यंपंचरस्तकोद्धाध
पंचारंतेन ग्रासीनालक्षेप्रकारं कोटि
हुतोमंडपेस्तकं धा गुरुपूजाविधा
नेवकुंडमकंकंनवंत मेषलात्रि
तयंवेदरामयुग्मागुलोक्रमान धा ए
कद्वित्रिकरणक्रर्यात हृदिकोपरिम
फल ब्रह्मविष्णुरविनांतु सर्वतोमंड
सिष्यते धा नवमंडलसर्वदेवानांनवो
नाभि स्तथा त्रयंत्रिगासर्वत्रिवस्या
पिंडं नालिगाद्भवतथा धा नवंगा
रि तिलकोंच देवानां पूजनेहिंतो
ग्रर्घ्यवंडं कुंकुंग षुचायांकारतथ्यव
घ धा टेकास्वस्तीसंचवचापी कूप
श्च पूजियेत पीठोका जलपटे चयो
नाकारंत्रकोमदं धा गदंतं मंडलं
गंधपुष्पसनमंडलंजयंत टेकासंच
रस्त्रवगजदंतमिश्रापन धा वि
ख्यातंसर्वतोमंडं ज्ञोयमन्यानि

लोक पूर्वादितोरणेषुक्रविघ्नंगवटपि
प्पले धा त्रिंशास्योङ्गोष्टेचकुत्र्वतो
वेदधारगात कलिनातंगमंपूर्णति यज्ञा
र्थं ग्रालिमंत्रेणन धा मंडपार्श्वत्रिलोग
न कुंडेरस्नानमंडपं खडिलेवास्तूक्त
क्रक त्वाज्ञोप्यायास्तारएवपुरं धा पंच
गव्यैः कथायेत्सवस्तकले क्षीरवृक्षावे
स्थापयेत्संचे कलशोज्ञानजाले जलेन
च धा वेदमंत्रैश्च वादित्रगीतमंगलना
स्वरेवस्त्रेण गादयेदियज्ञाद्यामंडपंजयेत्
न धा उत्सामा रुपयेत्वेद्यामुत्तरहिन्यसे
तनं कलशस्त्रीवाज्ञानस्थानेचमंडलु ध
ए व्यजनंदक्षेए दंडस्थपणंवामनःश्रु
स्रत्नमानकुर्या दिक्पात्यदक्षपूजन
धा ग्रग्नयंगणेज्ञोविघ्नान इंद्रानग्रह
मंडले नैरुत्यवास्कपूजे चवायव्यमाद्र
स्मृता दृष वज्रवेडर्यंकमुक्तामिश्रामु
लस्फटीलकाषुष्प रागंचगोमदं वज्रपू
वादितान्यसंत दृ सर्वणरजतनामृका
स्मरीतिचग्नीशंकं वगलोनंच पूर्वादिमु
ख्या धात्र निरुत्यसंत दृ वज्रीचकुंभ
स्तदवंविघ्नकोनकुंडवारुणत्रिविनायो
निर्मलोचवे ग्ररीनाक्रमात्यसंत दृ
यवोग्निस्तथाकं गुरुणाक्रिचनिर्ल
युता मालिमुखाः समाख्याता गाधुमाश्च
क्रमणेष धा यवेवालरणी पूजावज्रा
ले कोलसूषणं तस्यवीज्ञात्मितोदयंना
चर्या ख यज्ञियं दृष तत्तोमंत्रपवंकेयो
त्न्यस्य गीतरतंकन्न नवं ख्या रात्रिकं

पूजा मंगं न्यासादिकं तथा हस्तदीपं रंको
दंडं तेषां कानौनिबद्धं न्यपि षट्रस
स्वाङ्गलक्षणानि समानाप परिकल्पयेत्
इत्व विघ्नाणं संघ्रदायन्नेवटं मंत्रेस्नथा
गमे सकलीकरणं जीवन्या संकल्पत्वात्र
निष्टयेन हृद ग्रासादेदेवतान्यासस्था
वरशुद्धप्रथक्के प्रथक्क स्वरशिखायेवा
रहं वेत्यानागक्कलानिश्च हत्व प्रक्क
नजलेदवाश्वशुष्पकेकि सुरं स्नथा न
दीनेजा प्रक्कंतेवकणात्यां स्थापिधि
रि वव गलेशंगजथीवेवंश्रश्चपतिना
थाश्विन नरथीवेनरचेवक्रमाव शुस्के
यत वा नक्र संध्यात्रयंक्कंतेपाचेतोक्क
तेजोस्थिना कथानात्या उगंधवोनम
वीकाद्याश्वरस्वनि पंच जंघायोंचदश्रा
वालानिंद मदमंस्थित सप्तत्रीनरणि
देस शिरायाद्यावंदोलेका पंच लिंघाध
रानक्रधातात्म्यमंतरंत्ते मुरश्मिता पंच
स्य क्रवद्याद्य चलनोमध्यंप्रतिष्टयेत
पंच ग्राणायंत्रंद्र सूर्यविनिमुर्ति चान
रंगके ऊर्द्ध वेरस्थितयंद्रमश्चिनामर्क
चंद्रके पंच कोत्तिकायोधराधारो क्षिति
वोनानपद्दकेः मलेषुपर्वनां चैवमाका
शंचकरांटके पंच मध्यप्रतिष्टये दत्त
मकरेयाक्रवीतथा शिषेरुक्मे गंधर्व
चसप्तनिष्टयेत पंच वे ह्यचा दस्त
थाधारुद्रईशांरम्यसदाशिव ईश्वरं
चस्थरं देवंशिरस्थायोंशुसुगंधिय पंच
ग्रवायोंमभरंदे वंमरुकेचतिशाकरं

181/1922

पस्नाक्रं पंच पत्रेचकलशेो च सप्तधा
सच एव सप्तधा वामस्तस्युकषईसणेक्च
कर्णसूत्रोय ग्रंथंचपंचोगत्वान् प्रत्याजंये
न्नदप इतिस्थावरप्रतिष्ठा: प्राप्यमंत्रेच
नादष्ट दर्शयित्वान्यपूर्वतं विघ्नक्रमारि
कां वस्तुतनोलोकान् प्रदर्शयेत् पंच इ
तिनंतरतः क्रयात्रात्रधास्यपूजनं वस्त्रा
लंकार रुविचित्रगोमहिक्रश्चवा हनैप
र अन्येषांशिल्पिनांजाकर्त्तव्याकर्मका
रिणं स्वधिकारानुसारेण वस्त्रतंबुल
भोजनैपंच क्रष्टपाणि कारिलोयेन
मंदिरं तेनेतत्रत्युक्तं मौ ग्रीकरंस्त्रीदसं
मंद्र दंश पूर्ण्यो ग्रासादजं स्वामिग्राथंयि
स्युत्रधारि सुत्रधारोवटे स्वामीग्रहंय
नवनातव दंथ इतिसुत्रधारपुजाः ग्रा
चार्यपुजनंक्रत्वावा स्त्रस्वर्णाधनैः मंड
लानदद्याद्विजाति स्योदिनोधंड बलिषु
चपंच सर्वेषा मंतमाधारग्राणि नोजि
वनयरं वि नदंते मपूज्यंतिमानुषाः पि
तरःसुरा दंथ इतिधनिष्टा विधिः धा
तेष्टा वित्तरोक्तास्व जिनसासन मार्गत
नवकंसुर मंत्रस्व सिद्धकंचलिसाधि
तेदंथ ग्रहासर्वज्ञदेवस्यपाद पिंडप्र
तिष्टिता जिनानंत विनेदंत मुक्तेमा
र्गद्रदाक्रतं दंथ जिनानामातरोयक्ष
यदिणी गोतमादय सिद्धकालत्रयो
जात स्वत्रः विशंति मुनमाय थंथ इति
स्थाप्याजिना वोमेग्रष्टाकारं गृहंतथा
सामंतसिषरं नेदिसर स्वेष्टपदादिकं
थ ग्रासदोवित्तरागश्च सुरमंधशुष्क

132/1972

इति वास्तुशास्त्रे प्रासादमंडनो नाम
सादसमनोसद्धोत्तो नाम द्वितीयो
ध्यायः संपूर्णः लवेत्र यादृशंपुस्त
कं दृष्ट्वा तादृशंलिखितं मया यदिसु
द्धमशुद्धवा ममदोषोनदीयतां ॥ श्री
संवत १८ पण नावर्षे चैत्र सुद १३
दृहसपतिवारे लष्पुरेः मंगलः श्री